بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपासना के योग्य नहीं मुहम्मद[सo] अल्लाह के रसूल हैं।

Vol - 25
Issue - 05

राह-ए-ईमान

मई
2023 ई०

ज्ञान और कर्म का इस्लामी दर्पण

विषय सूचि

1. पवित्र क़ुरआन..... 2
2. पवित्र हदीस 2
3. हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी..... 3
4. रूहानी ख़ज़ायन (एक ईसाई के तीन सवाल और उनके जवाब पृष्ठ).....4
5. सम्पादकीय 6
6. हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की काव्य रचना 7
7. सारांश ख़ुत्बः जुम्अः (दिनांक 14.4.2023).....8
8. ख़िलाफ़त : एक सुरक्षित क़िला.....12
9. अरबईन नम्बर-2.....22
10. हुज़ूर अनवर से पूछे जाने वाले महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर.....26
11. पत्रिका के बारे में कृपया अपना फीडबैक (प्रतिक्रिया) अवश्य दें.....32

☆ ☆ ☆

सम्पादक
फ़रहत अहमद आचार्य

उप सम्पादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद M.A.
इब्नुल मेहदी लईक M.A.
संपादक - मंडल
फज़ल नासिर
सेटिंग
फ़रहत अहमद आचार्य
टाइटल डिज़ाइन
नूरुद्दीन नूरी
मैनेजर
अतहर अहमद शमीम M.A.
कार्यालय प्रभार
सय्यद हारिस अहमद

पत्र व्यवहार के लिए पता :-
सम्पादक राह-ए-ईमान, मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत,
क़ादियान - 143516 ज़िला गुरदासपुर, पंजाब।
Editor Rah-e-Iman, Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat,
Qadian - 143516, Distt. Gurdaspur (Pb.)
Fax No. 01872 - 220139, **Email : rahe.imaan@gmail.com**
Editor- 9115040806, Manager- 9815639670

लेखकों के विचार से अहमदिया मुस्लिम जमाअत का सहमत होना ज़रूरी नहीं

वार्षिक मूल्य: 130 रुपए

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat, P.O. Qadian, Distt. Gurdaspour 143516 Punjab iNDIA. Editor Farhat Ahmad

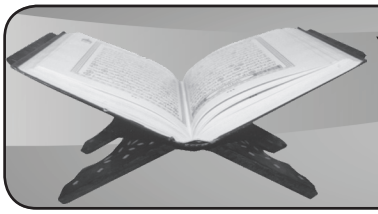

पवित्र क़ुरआन

(अल्लाह तआला के कथन)

وَ اِنَّ اللّٰهَ رَبِّيْ وَ رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ؕ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ﴿۳۶﴾ فَاخْتَلَفَ الْاَحْزَابُ مِنْۢ بَيْنِهِمْ ۚ فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ مَّشْهَدِ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿۳۷﴾ اَسْمِعْ بِهِمْ وَ اَبْصِرْ ۙ يَوْمَ يَاْتُوْنَنَا لٰكِنِ الظّٰلِمُوْنَ الْيَوْمَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿۳۸﴾

अनुवाद:- और अल्लाह मेरा भी रब्ब है और तुम्हारा भी। उसी की उपासना करो, यही सीधा रास्ता है। परन्तु विभिन्न गिरोहों ने आपस में एक-दूसरे से मतभेद किया (और सच्चाई को छोड़ दिया)। अत: जिन लोगों ने एक बड़े दिन में हाज़िर होने का इन्कार किया उन पर अज़ाब उतरेगा। जिस दिन वे हमारे सामने हाज़िर होंगे उस दिन उन की सुनने एवं देखने की शक्ति बड़ी तेज़ होगी, किन्तु वे अत्याचारी आज बड़ी भारी पथभ्रष्टता में पड़े हुए हैं। (सूरह मरियम - 37-39)

पवित्र हदीस

(हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथन)

अनुवाद: हज़रत अबू हुरैरह वर्णन करते हैं कि एक बार आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मस्जिद में तशरीफ़ फरमा थे कि एक आदमी आया और उस ने नमाज़ पढ़ी। फिर वह आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुआ और सलाम निवेदन किया। हुज़ूर ने उसके सलाम का जवाब दिया और कहा: जाओ फिर नमाज़ पढ़ो क्योंकि तुम्हारी नमाज़ नहीं हुई। इसलिए वह गया और नमाज़ पढ़ी और आकर आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सलाम किया। आपने उसके सलाम का जवाब दिया और कहा: जाओ फिर नमाज़ पढ़ो, तुम ने नमाज़ नहीं पढ़ी। ऐसा तीन बार हुआ तो उस आदमी ने कहा - उस हस्ती की कसम! जिस ने आप को सच्चाई दे कर भेजा है, मैं इस से अधिक बेहतर नमाज़ नहीं पढ़ सकता, इसलिए आप ही मुझे नमाज़ पढ़ने का सही ढंग बताइए। इस पर आप ने फरमाया- जब तुम नमाज़ पढ़ने के लिए खड़े हो जाओ तो तकबीर कहो, फिर तौफ़ीक़ के अनुसार कुरआन पढ़ो, फिर पूरी तसल्ली के साथ रुकूअ करो, फिर सीधे खड़े हो जाओ, फिर पूरी तसल्ली के साथ सजदा करो, फिर सजदे से उठ कर पूरी तसल्ली से बैठो। इसके बाद दूसरा सजदा करो, इस तरह सारी नमाज़ ठहर ठहर कर और संवार कर पढ़ो।

(बुख़ारी किताबुल आज़ान)

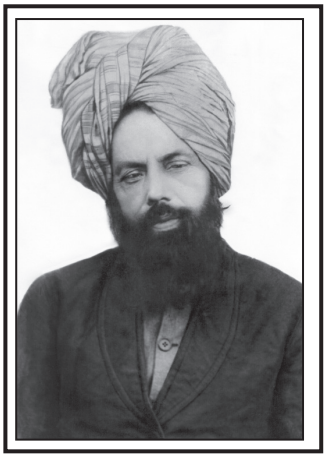

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :-

हश्र-ए-अज्साद (शरीरों को इकट्ठा करना) :-फिर अरब साहिब के प्रश्न पर फ़रमाया कि :- मरने के बाद मुर्दे का संबंध ज़मीन से अवश्य रहता है। मोमिन का संबंध एक आसमान से होता है और एक ज़मीन से। वास्तविक हिसाब-किताब तो बर्ज़ख़ (अस्थाई ठहरने का स्थान) में हो जाएगा परन्तु मुक़ाबला कराना शेष रह जाएगा वह हश्र को होगा। हज़ारों नबी दज्जाल, कज्ज़ाब, कुफ़्फ़ार, मलऊन इत्यादि-इत्यादि नामों से नामित होते रहे क़यामत में इसलिए हश्र होगा कि उनको सम्मान की कुर्सी पर बिठा कर और झूठों को अपमान का अज़ाब दे कर दिखाया जाएगा कि देखो कौन सच्चा और कौन झूठा था।प्रश्न किया कि हश्र को शरीर होगा या नहीं और यही शरीर होगा या कोई और?

फ़रमाया :- हश्र में शरीर दिए जाएंगे यह नहीं कि यही होगा या कोई और। यह मानी हुई बात है कि तीन वर्ष बाद पहला इंसानी शरीर नष्ट हो जाता है और इसके स्थान पर नया आ जाता है। फिर हमारा ईमान (विश्वास) है कि उनको शरीर मिलेगा परन्तु जिस प्रकार उस अलीम (सर्वज्ञानी ख़ुदा) के ज्ञान में है। हमारा इस पर ईमान है कि वह समर्थवान है कि उस शरीर से भी कुछ भाग उसे दे दे और उसके अतिरिक्त और शरीर भी प्रदान करे केवल ख़ुदा के अतिरिक्त किसी की यह विशेषता नहीं कि हमेशा शाश्वत रहे और यह सामर्थ्य ख़ुदा ही मनुष्य को देगा कि फिर वह अबदी (शाश्वत) बन जाए।

फिर प्रश्न किया कि क्यों यह दर्जा केवल इंसान को ही मिलेगा और जानवरों को नहीं दिया जाएगा।

फ़रमाया इस पर हम झगड़ा नहीं कर सकते जैसा एक व्यक्ति उदारता करता है एक फ़कीर को वह पैसा देता है और दूसरे को रुपया। परन्तु जिस को वह पैसा मिला है वह अधिकार नहीं रखता कि झगड़ा करे। बहिश्त (स्वर्ग) वालों को तो शाश्वत रहना होगा और हदीसों में आया है कि दोज़खी (नर्क वाले) इस में हमेशा नहीं रहेंगे। जैसा कि फ़रमाया يَأْتِيْ عَلٰى جَهَنَّمَ زَمَانٌ لَيْسَ فِيْهَا اَحَدٌ क्योंकि वह भी आखिर ख़ुदा के हाथ से बने हुए हैं उन पर कोई युग ऐसा आना चाहिए कि उनको अज़ाब की छूट दी जाए।

यह आध्यात्मिक बातें होती हैं नर्क से निकलेंगे परन्तु यह नहीं लिखा कि स्वर्ग में मोमिन के समान उनको भी कुछ भाग प्राप्त होगा हाँ उनके माथे पर नर्क का निशान होगा।

फिर पूछा कि मैंने आज से पहले कभी रोज़ा (उपवास) नहीं रखा इस का क्या फिदय: दूं?

फ़रमाया : ख़ुदा प्रत्येक व्यक्ति को उसके सामर्थ्य से अधिक दु:ख नहीं देता। सामर्थ्य अनुसार पिछला फिद्य: दे दो और आगे से वचन लो कि समस्त रोज़े अवश्य रखूँगा। (मल्फ़ूज़ात जिल्द-4)

★ ★ ★

रूहानी ख़ज़ाइन

पुस्तक: एक ईसाई के तीन सवाल और उनके जवाब

(हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित)

यदि हम कल्पना के तौर पर स्वीकार भी कर लें कि जो कुछ प्रचलित इन्जीलों में हज़रत मसीह के बारे में बयान किया गया है कि लूले और लंगड़े और लकवाग्रस्त तथा अंधे इत्यादि बीमार उनके छूने से अच्छे हो जाते थे। यह समस्त वर्णन अतिश्योक्ति के बिना है और प्रत्यक्ष पर ही चरितार्थ है कोई और अर्थ उसके नहीं। तब भी हज़रत मसीह की इन बातों से कोई बड़ी ख़ूबी नहीं सिद्ध होती। प्रथम तो उन्हीं दिनों में एक तालाब भी ऐसा था कि उसमें एक विशेष समय में ग़ोता मारने से ऐसे सब रोग तुरन्त दूर हो जाते थे जैसा कि स्वयं इंजील में वर्णन है फिर इसके अतिरक्ति लम्बे समय के अन्वेषणों से इस बात को सिद्ध कर दिया है कि रोगों को समाप्त करने की महारत बहुत सी विद्याओं में से एक विद्या है जिसके अब भी बहुत लोग शौकीन पाए जाते हैं। जिसमें अत्यन्त ध्यान तथा मानसिक शक्तियों के व्यय करने और विचार के आकर्षण का प्रभाव डालने के लिए अभ्यास की आवश्यकता है। अत: इस विद्या का नुबुव्वत से कुछ संबंध नहीं अपितु सदाचारी पुरुष होना भी इसके लिए आवश्यक नहीं और सदैव से ये विद्या प्रचलित होती चली आई है। मुसलमानों में कुछ बुज़ुर्ग लोग जैसे मुहियुद्दीन (इब्न) अरबी साहिब फ़ुसूस और कुछ नक्शबंदियों के बुज़ुर्ग इस काम में अभ्यस्त गुज़रे हैं। ऐसे कि उनके समय में उनका उदाहरण नहीं पाया गया अपितु कुछ के बारे में वर्णन किया गया है कि वे अपने पूर्ण ध्यान से ख़ुदा तआला के आदेश से ताज़ा मुर्दों से बातें कर के दिखला देते थे[1]★ और दो-दो तीन-तीन सौ रोगियों को अपने दायें बाएं बिठा कर एक ही नज़र से स्वस्थ कर देते थे और कुछ जो अभ्यास में कमज़ोर थे वे हाथ लगा कर या रोगी के कपडे को छू कर रोगमुक्त करते थे। इस अभ्यास में आमिल अमल के समय कुछ ऐसा अहसास करता है कि जैसे उसके अन्दर से रोगी पर प्रभाव डालने के समय एक शक्ति निकलती है और कभी रोगी को भी यह दिखाई देता है कि उसके अन्दर से एक ज़हरीला तत्व गति कर के निचले अवयवों की ओर उतरता चला जाता है यहाँ तक कि पूर्णतया समाप्त हो जाता है। इस विद्या में इस्लाम में बहुत सी पुस्तकें मौजूद हैं और मैं समझता हूँ कि हिन्दुओं में भी इसकी पुस्तकें होंगी। वर्तमान में जो अंग्रेज़ों ने मैस्मरिज़्म की कला निकाली है वास्तव में वह भी इसी विद्या की एक शाखा है। इंजील पर विचार करने से ज्ञात होता है कि हज़रत मसीह को भी इस विद्या में कुछ अभ्यास था परन्तु निपुण नहीं थे। उस समय के लोग सादा और इस विद्या से अपरिचित थे इसी कारण उस युग में यह अमल अपनी सीमा से अधिक प्रशंसनीय समझा गया था परन्तु पीछे से ज्यों-ज्यों इस विद्या की वास्तविकता

★**हाशिया :-** ताज़ा मुर्दों का अमल ध्यान से कुछ मिनट या कुछ घंटो के लिए जीवित हो जाना प्रकृति के नियम के विरुद्ध नहीं जिस हालत में हम स्वयं अपनी आँखों से देखते हैं कि कुछ प्राणी मरने के पश्चात् किसी दवा से ज़िन्दा हो जाते हैं तो फिर मनुष्य का ज़िन्दा होना क्या कठिन और क्यों अनुमान से दूर है। इसी से।

खुलती गई लोग अपने उच्च विश्वास से पतन करते गए। यहाँ तक कि यह राय व्यक्त की कि ऐसे अभ्यासों से रोगियों को अच्छा करना या पागलों को रोगमुक्त करना कुछ भी ख़ूबी की बात नहीं अपितु उसमें ईमानदार होना भी आवश्यक नहीं, कहाँ यह कि नुबुव्वत या विलायत पर यह तर्क हो सके। उनका यह भी कथन है कि शारीरिक रोगों को समाप्त करने के अमल का पूर्ण अभ्यास और उसी कार्य में दिन-रात स्वयं को डाले रखना रूहानी उन्नति के लिए अत्यन्त हानिप्रद है और ऐसे व्यक्ति के हाथ से रूहानी प्रशिक्षण का कार्य बहुत ही कम होता है और उसके हृदय की प्रकाशित करने वाली शक्ति बहुत घट जाती है। सोचा जा सकता है कि इसी कारण से हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम अपने रूहानी प्रशिक्षण में बहुत कमज़ोर निकले जैसा कि पादरी बटलर साहिब जो पद की दृष्टि तथा व्यक्तिगत योग्यता के कारण एक विशेष व्यक्ति मालूम होते हैं। वह बहुत अफ़सोस से लिखते हैं कि मसीह का रूहानी प्रशिक्षण बहुत ही कमज़ोर सिद्ध होता है और उनके संगत प्राप्त लोग जो हवारियों के नाम से जाने जाते थे अपने रूहानी प्रशिक्षण प्राप्त होने में और मानवीय शक्तियों की पूर्णता से कोई उच्च श्रेणी का नमूना न दिखला सके। (काश हज़रत मसीह ने अपने प्रत्यक्ष रोगों को समाप्त करने के कार्य की ओर कम ध्यान दिया होता और वही ध्यान अपने हवारियों की आन्तरिक कमज़ोरियों और बीमारियों पर डालते, विशेष रूप से यहूदा इस्क्रियूती पर) इस स्थान पर उपरोक्त सज्जन यह भी फ़रमाते हैं कि यदि अरबी नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के सहाबा के मुकाबले पर हवारियों के रूहानी प्रशिक्षण और धार्मिक दृढ़ता की तुलना की जाए तो हमें अफ़सोस के साथ इक़रार करना पड़ता है कि हज़रत मसीह के हवारी रूहानी तौर पर प्रशिक्षण प्राप्त होने में बहुत ही कच्चे और पिछड़े हुए थे तथा उनकी मानसिक एवं हार्दिक शक्तियों को हज़रत मसीह की संगत ने कोई ऐसी महानता प्रदान नहीं की थी जिसकी सहाबा नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के मुक़ाबले पर प्रशंसा हो सके अपितु हवारियों की क़दम-क़दम पर कायरता, विश्वास की कमी, कृपणता, दुनियादारी, बेवफ़ाई सिद्ध होती थी। परन्तु नबी अरबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सहाबा में वह श्रद्धा और वफ़ादारी दिखाई दी जिसका उदाहरण किसी दूसरे नबी के अनुयायियों में मिलना कठिन है। अत: यह उस रूहानी प्रशिक्षण का प्रभाव था जो पूर्ण तौर पर हुआ था, जिसने उनको पूर्णतया परिवर्तित कर के कहीं का कहीं पहुंचा दिया था। इसी प्रकार बहुत से बुद्धिमान अंग्रेज़ों ने वर्तमान समय में ऐसी पुस्तकें लिखी हैं कि जिनमें उन्होंने इक़रार कर लिया है कि यदि हम नबी अरबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की हालत, ख़ुदा की ओर समर्पित और उस पर भरोसा, व्यक्तिगत दृढ़ता, पूर्ण शिक्षा, शुद्ध इलक़ा के प्रभाव और बहुत सी उपद्रवी जनता के सुधार और सर्वशक्तिमान ख़ुदा की बाह्य और आन्तरिक सहायताओं को इन चमत्कारों को पृथक कर के भी देखें तो जो पुस्तकों से उनके बारे में वर्णन की जातीं हैं तब भी हमारा इन्साफ़ इस इक़रार के लिए विवश करता है कि ये समस्त बातें जो उनसे प्रकटन में आई यह भी निस्सन्देह विलक्षण तथा मानवीय शक्तियों से उच्चतर हैं और सच्ची सही नुबुव्वत की पहचान करने के लिए शक्तिशाली और पर्याप्त निशान हैं। कोई इन्सान जब तक उसके साथ ख़ुदा तआला न हो कभी इन सब बातों में कामिल और सफ़ल नहीं हो सकता और न ऐसे परोक्ष के समर्थन में उसके साथ होते है।

(एक ईसाई के तीन सवाल और उनके जवाब पृष्ठ 40-43)

सम्पादकीय

ख़िलाफ़त को मानने वाले मुसलमानों की अलग पहचान

आज विश्व पटल पर मुसलमानों के जितने फिरके हैं उनमें कहीं ख़िलाफ़त मौजूद नहीं है लेकिन वे ख़लीफ़ा की तलाश में इधर-उधर भटक रहे हैं, ख़िलाफ़त की ज़रूरत और अहमियत पर भाषण देते, सड़कों पर रैलियां निकालते और जुलूस निकालते हैं और मानते हैं कि ख़िलाफ़त होनी चाहिए क्योंकि ख़िलाफ़त के बिना इस्लाम उन्नति नहीं कर सकता। लेकिन इन तथाकथित मुसलमानों को क्या पता कि ख़िलाफ़त ख़ुदा की ओर से एक इनाम है खुदा जिसको चाहता है ख़लीफ़ा बनाता है यह इन्सान का काम नहीं।

अल्लाह की कृपा से अहमदिया जमात में मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बाद ख़िलाफ़त सफलतापूर्वक स्थापित है। और हमारे ख़लीफ़ा को अब पूरी दुनिया में इस्लाम के ख़लीफ़ा के नाम से जाना और पहचान जाता है। यह ख़िलाफ़त की ही बरकत है कि दुनिया भर के राजमहलों और सदनों में अहमदियत को इस्लाम के प्रतिनिधि के रूप में जगह मिलती है और सम्मान और विनम्रता के साथ व्यवहार किया जाता है। अहमदी ख़लीफ़ा आज न केवल अहमदियों का बल्कि तृतीय विश्व युद्ध की आहट से अवगत करा कर पूरी दुनिया का मार्गदर्शन कर रहे हैं और जहां तक अन्य मुसलमानों का संबंध है जो ख़िलाफ़त को नहीं मानते, वे आज भी इसी सोच में डूबे हैं कि हम अहमदियों को इस दुनिया से कैसे खत्म कर सकते हैं। बहरहाल अल्लाह उनको समझ दे।

कुरआन में खुदा का वादा है कि ख़िलाफ़त अमन की गारंटी है, यह बिल्कुल 100 प्रतिशत सत्य नज़र आता है। ख़िलाफ़त की दुआओं से जमात का हर खौफ अमन में तब्दील हो गया और अहमदी हज़ार मुसीबतें सहन करके भी दुनिया में अमन ही फैलाते हैं। उन पर दुखों के पहाड़ टूटे, उनकी जानें ले ली गई, संपत्तियां जलाई गईं लेकिन ख़िलाफ़त के अनुयायी अहमदियों ने सब्र किया और दूसरों को मारना तो दूर, खुद को बम से उड़ाना तो दूर उन्होंने जुलूस तक नहीं निकाले, हड़तालें नहीं कीं, केंडल मार्च नहीं निकाले सिर्फ सब्र किया और मामला खुदा पे छोड़ दिया। यह सब ख़िलाफ़त की बरकत है कि जो ख़लीफ़ा की एक आवाज़ पर अहमदी अपनी जानें न्योछावर करने को तैयार रहते हैं। अहमदी मुसलमान कभी क़ानून अपने हाथ में नहीं लेते, प्रशासन के लिए कभी मुसीबत नहीं बनते। आपने कभी नहीं देखा होगा कि कहीं किसी अहमदी ने कोई दंगा फसाद किया हो क्यों? क्योंकि अहमदियों के पास ख़िलाफ़त की व्यवस्था है और वे हमेशा उसका अनुसरण करने हेतु तत्पर रहते हैं। यही कारण है कि अहमदी मुसलमान एक अच्छे नागरिक के रूप में पहचाने जाते हैं।

इसके विपरीत वह मुसलमान हैं जो ख़िलाफ़त को नहीं मानते हैं उनको समझाने वाला कोई नहीं हैं उनके पास कोई ऐसा नहीं जो कदम कदम पर उनका मार्गदर्शन करे उनको अच्छा बुरा समझाए उनको कुरान की सही व्याख्या करके बताए यही कारण है कि वे संसार में इस्लाम की वास्तविक शिक्षाओं के विरुद्ध काम करके इस्लाम को बदनाम करते हैं।

रहेंगे ख़िलाफ़त से वाबस्ता हम जमात का क़ायम है इस से भरम
न होगा कभी अपना इख़लास कम बढ़ेगा इसी से हमारा क़दम।।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की काव्य रचना

मुश्किलों के भँवर से मुक्ति पाने का रास्ता

नीचे जो नज़्म लिखी जा रही है ये हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक शेख़ मुहम्मद बख़्श रईस कड़यानवाला गुजरात को लिख कर दी थी जबकि वे अत्यधिक धन संकट में ग्रस्त थे। ख़ुदा ताला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की दुआ के फलस्वरूप उनके कष्ट दूर कर दिए।

इक न इक दिन पेश होगा तू फ़ना[1] के सामने
चल नहीं सकती किसी की कुछ क़ज़ा[2] के सामने
छोड़नी होगी तुझे दुनिया ए फ़ानी एक दिन
हर कोई मजबूर है हुक़्मे ख़ुदा के सामने
मुस्तकिल[3] रहना है लाज़िम ऐ बशर तुझको सदा
रन्ज[4] ओ ग़म, यास[5] ओ अलम, फ़िक्र[6] ओ बला के सामने
बारगाह[7] ईज़दी से तू न यूँ मायूस[8] हो
मुश्किलें क्या चीज़ हैं मुश्किल कुशा[9] के सामने
हाजतें पूरी करेंगे क्या तेरी आजिज़[10] बशर
कर बयाँ सब हाजतें हाजत रवा[11] के सामने
चाहिए तुझ को मिटाना क़ल्ब[12] से नक़्शे दोई[13]
सिर झुका बस मालिके अर्ज़[14] ओ समां के सामने
चाहिए नफ़रत[15] बदी से और नेकी से प्यार
एक दिन जाना है तुझ को भी ख़ुदा के सामने
रास्ती[16] के सामने कब झूठ फ़लता है भला
क़द्र क्या पत्थर की, लअले बे-बहा[17] के सामने।।

---

1. मौत। 2. ख़ुदा का आदेश। 3. आवश्यक। 4. दुःख। 5. निराशा। 6. परेशानी। 7. ख़ुदा की चौखट। 8. निराश। 9. मुश्किल दूर करने वाला। 10. कमज़ोर। 11. ज़रूरत पूरी करने वाला। 12. मन। 13. शिर्क। 14. आकाश तथा धरती। 15. घृणा। 16. सच्चाई। 17. कीमती अनमोल रत्न।

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक- 14.4.2023 मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, टिलफोर्ड बर्तानिया

हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के विवेक पूर्ण कथनों की रोशनी में
ला इलाहा इल्लल्लाह की विवेक पूर्ण व्याख्या।
विश्व की सामान्य स्थिति एवं शांति तथा स्थिरता के लिए दुआ की तहरीक।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूर: फ़ातिहा की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया:- لا الٰہ الا اللہ (ला इलाहा इल्लल्लाह) वह कलमा (वाक्य) है जो तौहीद का आधार है। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि निश्चित ही अल्लाह तआला ने उस व्यक्ति को आग पर हराम कर दिया जिसने अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्ति के लिए ला इलाहा इल्लल्लाह पढ़ा। अतएव जब अल्लाह तआला की ख़ुशी को पाने के लिए, उसकी ओर झुकते हुए अपने ध्यान को केवल अल्लाह तआला की ओर केन्द्रित एवं शुद्ध करते हुए इंसान لا الٰہ الا اللہ पढ़ता है तो वह अल्लाह तआला का कृपा पात्र बनता है। जैसा कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला नरक की आग उस पर हराम कर देगा और यही शिक्षा थी जो समस्त नबी लेकर आए। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि सबसे उत्तम कलमा जो मैंने तथा पहले नबियों ने कहा वह لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ है। अत: यह शिक्षा समस्त नबियों की है किन्तु दुर्भाग्यवश उन्हीं नबियों की क़ौमों ने इस शिक्षा को स्वयं ही अथवा अन्य सूत्रों द्वारा भूल कर शिर्क का माध्यम बना लिया। हम भाग्य शाली हैं कि हमें अल्लाह तआला ने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत में शामिल करके वह सम्पूर्ण शिक्षा दी जिसने शिर्क को पूर्णत: समाप्त कर दिया और आप स. ने तौहीद का वास्तविक पाठ देकर हमारी दुनिया तथा आख़िरत संवार दी। अत: अब जो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वास्तविक शिक्षानुसार कर्म करेगा तथा शुद्ध होकर ख़ुदा तआला के एक अकेला ईश्वर होने को स्वीकार करेगा, वही अल्लाह तआला का कृपा पात्र बनेगा और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सिफ़ारिश का भी फल पाएगा।

आप स. की सिफ़ारिश के लिए पवित्र दिल के साथ لا الہ الا اللہ का इक़रार करना है जिसमें दुनिया का अंश न हो। आप स. वे अन्तिम तथा सम्पूर्ण नबी हैं जिन्हें अल्लाह तआला ने सिफ़ारिश का अधिकार दिया है तथा आप स. की शफ़ाअत (सिफ़ारिश) के लिए अल्लाह तआला के आदेशानुसार आप स. पर ईमान लाना भी अनिवार्य है।

हम अहमदी भाग्य शाली हैं कि हमें अल्लाह तआला ने इस ज़माने के इमाम और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सच्चे $गुलाम को मानने की तौफ़ीक़ प्रदान की जिन्होंने इस्लाम के निर्देशों को खोल कर उनकी गहराई तथा हिकमत के साथ बताया। जहाँ आप अलै. ने لا الہ الا اللہ की गहराई के बारे में हमें बताया वहाँ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के स्तर के बारे में भी हमें बताया। इस समय मैं इस सम्बंध में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कुछ वृत्तांत पेश करूँगा जो इस विषय पर अति सुन्दरता से रोशनी डालते हैं तथा हमारा ध्यान भी इस ओर आकर्षित करते हैं कि हमें भी इस विषय की गहराई को समझते हुए किस तरह आत्म निरीक्षण करना चाहिए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला ने अपने फ़रमान- اَلیوم اَکملتُ की व्याख्या आप ही फ़रमा दी है। इसमें तीन निशानियों का पाया जाना अति आवश्यक है। पहली اَصْلُهَا ثَابِتٌ जिसकी जड़ें मज़बूती से स्थापित हैं। दूसरी निशानी فَرْعُهَا فِي السَّمَاءِ है कि उसकी शाखाएँ आकाश की बुलन्दियों तक पहुंची हुई हैं। तीसरी निशानी تُؤْتِيْٓ اُكُلَهَا كُلَّ حِيْنٍ के हर समय ताज़ा फल देती है। फ़रमाय कि इस्लाम ही वह दीन है जो इस स्तर पर पूरा उतरता है, और फ़रमाया कि पहली निशानी ईमानिया नियम से अभिप्राय: कलमा ला इलाहा इल्लल्लाह है जिसको इतने अधिक गुणों के साथ क़ुर्आन करीम में फ़रमाया गया है जिसके समस्त प्रमाणों को यदि लिखा जाए तो कई पुस्तकों में पूरे नहीं हो सकते। ख़ुदा तआला के समस्त उत्पादन तथा सृष्टि की व्यवस्था स्पष्ट रूप से बतला रही है कि इस संसार का एक अविष्कारक तथा रचीयता है जिसके लिए ये आवश्यक गुण हैं कि वह दयावान, कृपावान, पूर्ण रूप से समर्थ, एक अकेला जिसका कोई सहयोगी न हो, अनन्त काल से तथा सदैव के लिए और अपनी इच्छानुसार युक्ति करने वाला भी हो तथा सम्पूर्ण गुणों एवं विशेषताओं में समृद्ध भी हो तथा वह्यी को अवतरित करने वाला भी हो। अत: ला इलाहा इल्लल्लाह केवल एक उपासनीय का विचार ही दिल में पैदा नहीं करता बल्कि इस बात को भी दिल में उतार देता है तथा उतारना चाहिए कि हमारा ख़ुदा अनादि काल से है तथा अनन्त तक रहेगा। वह प्रत्येक प्राणी का रचनाकार है तथा समस्त आवश्यकताओं के लिए उसके समक्ष ही झुकना है। अत: जब ईमान की यह अवस्था हो जाए तो वह सम्पूर्ण ईमान होता है जिसमें शिर्क की मिलावट हो ही नहीं सकती और यही वह ईमान है जिसके बारे में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि शुद्ध होकर لا الہ الا اللہ पर ईमान लाने वालों पर नर्क की आग वर्जित है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला ही वह सम्पूर्ण अस्तित्व है जिससे सहायता मांगने का हक़ है और कोई अन्य इस हक़ को नहीं रख सकता। इसी पर क़ुर्आन करीम ने ज़ोर दिया, अत: फ़रमाया कि उपासना भी तेरी करते हैं तथा तेरी उपासना करने के लिए सहायता भी तुझसे ही चाहते हैं, जिससे ज्ञात हुआ कि सहायता देने का मूल अधिकार अल्लाह तआला का ही है। दूसरे स्तर पर यह अधिकार अल्लाह वालों तथा सत्यपुरुषों को दिया गया है कि उनकी दुआओं से भी सहायता मिलती है। फ़रमाया कि हमको

नहीं चाहिए कि कोई बात अपनी ओर से बना लें बल्कि अल्लाह तआला के फ़र्मूदह और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निर्देशों के अन्दर अन्दर रहना चाहिए, इसका नाम सच्चा और सीधा मार्ग है और यह बात ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह से भी भली भांति समझ में आ सकती है। لا الٰہ الا اللہ محمد رسول اللہ के पहले भाग से पता चलता है कि इंसान का प्रिय तथा उद्देश्य अल्लाह तआला ही होना चाहिए तथा दूसरे भाग से रिसालत मुहम्मदिया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वास्तविकता प्रकट होती है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि لا الٰہ الا اللہ का हक़ अदा नहीं होता जब तक कहने वाला अपने इक़रार में अमली रूप से साबित न कर दे और यही ईमान की शर्त है। अल्लाह तथा उसके बन्दों के अधिकार अदा करने का भी अमल होना आवश्यक है तब कहीं इंसान لا الٰہ الا اللہ पर अमल करने वाला बनता है तथा तब ही इंसान ख़ुदा तआला के समक्ष झूठा नहीं होता।

इस कलमे का दूसरा भाग नमूने के लिए है, नबी अलैहिस्सलाम नमूने दिखाने के लिए आते हैं और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जामे (संयुक्त) नबी थे जिनमें समस्त नबियों के नमूने एकत्र थे, अल्लााह तआला के आदेशों पर उचित रंग में अमल तथा व्यापक व्याख्या आप स. ने ही फ़रमाई तथा उसके अनुसार अमल करके दिखाया।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपने मानने वालों को नसीहत करते हुए फ़रमाते हैं कि बैअत रस्मी लाभ नहीं देती। ऐसी बैअत में भागीदार होना कठिन है जब तक अपने अस्तित्व को त्याग कर, शुद्ध होकर, जिसकी बैअत की है उसके साथ न हो जाए, तब ही बैअत हितकारी होगी। जहाँ तक सम्भव हो अन्य कर्मों तथा इबादतों में गुरु के रंग में रंगीन हो तथा सुबह से शाम तक अपना हिसाब करना चाहिए कि किस सीमा तक हमने لا الٰہ الا اللہ के अनुसार कर्म किए हैं। फिर फ़रमाया कि मेरा यह अभिप्राय: कदाचित नहीं कि मुसलमान कलमा पढ़ ले तथा सुस्त हो जाए, बल्कि अपने व्यापारों एवं नौकरियों में व्यस्त हो परन्तु ख़ुदा का हक़ अदा करने की ओर भी ध्यान होना आवश्यक है। अल्लाह तआला की अप्रसन्नता को व्यापार करते समय भी समक्ष रखे। प्रत्येक मामले में दीन को दुनिया पर प्रमुख रखे, दुनिया प्राप्ति ही जीवन का लक्ष्य न हो, मूल उद्देश्य दीन हो फिर दुनिया के काम भी दीन ही होंगे। सहाबा किराम रज़ी. ने भी कठिन से कठिन समय पर ख़ुदा को नहीं छोड़ा तथा न ही ख़ुदा से गाफिल हुए और न नमाज़ें छोड़ीं, बल्कि दुआओं से काम लिया।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम कलमे की वास्तविकता तथा इसके अर्थ एवं इसके अनुसार कर्म करने के विषय में फ़रमाते हैं कि ईमान लाना यही है कि अपने कर्मों के द्वारा उन बातों को व्यक्त कर दे जो अल्लाह तआला के आदेश क़ुर्आन करीम में बयान हुए हैं और फिर वास्तव में अमली रूप में दीन को दुनिया पर प्राथ्मिक कर दे। अत: जिसने सत्य मन से لا الٰہ الا اللہ को मान लिया, वह स्वर्ग में दाख़िल हो गया। फिर ख़ुदा के अलावा उसको कोई प्यारा नहीं रह सकता तथा वह केवल अल्लाह तआला की प्रसन्नता को चाहता है तथा कठिनाईयों से वह दु:खी नहीं होता क्यूँकि उसे विश्वास होता है कि अल्लाह तआला अपने वली की सहायता के लिए तुरन्त पहुंचता है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि जब तक अल्लाह एवं उसके बन्दों के अधिकार

नहीं दिए जाते उस समय तक لا الٰہ الا اللہ का वास्तविक अर्थ नहीं पा सकते। एक भाई दूसरे भाई का हक़ मारता है तथा साधनों पर इतना अधिक भरोसा करते हैं कि ख़ुदा तआला को केवल व्यर्थ का अंग मान रखा है। बड़े ही कम लोग हैं जिन्होंने तौहीद के मूल अर्थ को समझा है। यदि इंसान कलमे की वास्तविकता से अवगत हो जावे तथा अमली रूप में उसके अनुसार कर्मबद्ध हो जावे तो वह बड़ी उन्नति कर सकता है तथा ख़ुदा तआला के आश्चर्य जनक एवं अद्भुत सामर्थ्यों के दर्शन कर सकता है। सच्चा एकेश्वरवादी उस समय ही बन सकता है जब समस्त बुराईयों को दूर कर दे। अत: इस रमज़ान में हममें से हर एक को प्रयास करना चाहिए कि इन बुराईयों से स्वयं को पाक करें और لا الٰہ الا اللہ पर वास्तविक रूप में ईमान लाने वाले हों। अल्लाह तआला हमें तौफ़ीक़ प्रदान करे कि रमज़ान के इन शेष दिनों में हम कोशिश और दुआ से अपने भीतर की समस्त बदियाँ निकालने वाले बन जाएँ।

रमज़ान के अन्तिम दशक में हम लैलतुल क़द्र की बातें करते हैं। लैलतुल क़द्र तो वास्तव में उस समय मिलती है जब हम अपना हर एक कथन एवं कर्म अल्लाह तआला के आदेशानुसार करने के लिए तय्यार हो जाएँ, इसके अनुसार कर्म करने वाले हों तथा इसे निरन्तर अपने जीवनों का अंश बनाने वाले हों। यही वह मूल निशानी है जो लैलतुल क़द्र के पाने की निशानी है। वास्तविक निशानी यह है कि हमारे दिलों में कैसी क्रान्ति पैदा हुई। कुछ जमाअतों ने दुआओं के भी विशेष प्रोग्राम मेरी इस बात को सम्मुख रखते हुए बनाए हैं कि यदि हम शुद्ध होकर तीन दिन दुआएँ करें तो अल्लाह तआला की विशेष कृपा प्रकट हो सकती है। यदि हमने ये तीन दिन विशेषत: इस कारण से निश्चित किए हैं कि तीन दिन दुआओं में लगा लो और फिर अपनी पुरानी जीवन शैली पर आ जाओ और لا الٰہ الا اللہ के मूल उद्देश्य को भूल जाओ तो हमें याद रखना चाहिए कि अल्लाह तआला हमारे दिलों के हाल को जानता है, हमारी धारणाओं को जानता है, कोई चीज़ उससे छुपी हुई नहीं, ऐसी अवस्था में इसका कोई लाभ नहीं होगा। परन्तु यदि अल्लाह तआला को ख़ुश करने के लिए ये दिन व्यतीत करना चाहते हैं तो फिर इस संकल्प के साथ गुज़ारने होंगे कि अब ये दिन हमारे जीवन का स्थाई अंश बन जाएँ। फिर ये कठिनाईयाँ जो विरोधी हमें पहुंचा रहा है उनको दूर करने के लिए ख़ुदा तआला अपने विशेष समर्थन एवं सहायता प्रकट करेगा, इन्शाअल्लाह।

अल्लाह तआला का हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से वादा है कि आप अलै. तथा आप अलै. की जमाअत को विजयी करेगा, शीघ्र अथवा कुछ समय पश्चात, हाँ यदि हम لا الٰہ الا اللہ की वास्तविकता को समझते हुए अपना उपास्य, उद्देश्य एवं प्रिय केवल ख़ुदा तआला की ज़ात को बना लें तथा दुनिया से अधिक हमें ख़ुदा तआला से मुहब्बत और उसको पाना हमारा उद्देश्य हो तो इंक़लाब जल्दी आ सकता है। हमें अपनी अवस्थाओं में निरन्तर बदलाव करने का संकल्प करना होगा।

हुज़ूर-ए-अनवर ने अन्त में फ़रमाया कि इन दिनों में विश्व के सामान्य अमन एवं स्थिरता के लिए भी दुआ करते रहें, अल्लाह तआला इंसानियत पर रहम और फ़ज़ूल फ़रमाए।

टोल फ्री सम्पर्क नंबर अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान- 1800 103 2131

☆ ☆ ☆

ख़िलाफ़त आफ़ियत का हिसार
(अर्थात ख़िलाफ़त: एक सुरक्षित क़िला)

(श्री के. तारिक़ अहमद साहिब, सदर मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत व इंचार्ज विभाग नूरुल इस्लाम)

अनुवादक: सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद M.A.

وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلَائِكَةِ إِنِّي جَاعِلٌ فِي الْأَرْضِ خَلِيفَةً قَالُوا أَتَجْعَلُ فِيهَا مَنْ يُفْسِدُ فِيهَا وَيَسْفِكُ الدِّمَاءَ وَنَحْنُ نُسَبِّحُ بِحَمْدِكَ وَنُقَدِّسُ لَكَ قَالَ إِنِّي أَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُونَ

(सूर: बकर: : 31)

अनुवाद : और (याद रख) जब तेरे रब ने फ़रिश्तों से कहा कि निसन्देह मैं ज़मीन में एक ख़लीफ़ा बनाने वाला हूँ। उन्होंने कहा क्या तू उस में वह बनाएगा जो उस में फ़साद करे और ख़ून बहाए जबकि हम तेरी हमद के साथ तस्बीह करते हैं और हम तेरी पाकीज़गी वर्णन करते हैं। उस ने कहा निसन्देह मैं वह सब कुछ जानता हूँ जो तुम नहीं जानते।

सिदक़ से मेरी तरफ़ आओ इसी में ख़ैर है
हैं दरिंदे हर तरफ़, मैं आफ़ियत का हूँ हिसार

हज़रात! सय्यदना हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम वर्णन फ़रमाते हैं :

"इस ज़माना का हिस्न-ए-हसीन मैं हूँ। जो मुझ में दाख़िल होता है वह चोरों और क़ज़्ज़ाक़ों और दरिंदों से अपनी जान बचाएगा परंतु जो शख़्स मेरी दीवारों से दूर रहना चाहता है हर तरफ़ से उस को मौत का खतरा लगा हुआ है और उसकी लाश भी सलामत नहीं रहेगी। (फ़तह इस्लाम, पृष्ठ : 34)

क़ाबिल-ए-एहतेराम सदर-ए-इज्लास, मुअज़्ज़िज़ हज़रात! अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाह व बरकातहू। मेरी तक़रीर का विषय जैसा कि आप सुन चुके हैं "ख़िलाफ़त: आफ़ियत का हिसार" है

हज़रात! हज़रत-ए-आदम अलैहिस्सलाम की ख़िलाफ़त के आरंभ में ख़ालिक़-ए-हक़ीक़ी और फ़रिश्ते का यह मुकालमा एक अमर की ख़ूब वज़ाहत करता है कि ख़लीफ़ा के अमन प्रदान करने वाले वजूद के साथ इस क़दर ख़ूनखराबा और फ़साद के बादल घिरे नज़र आते हैं कि फ़रिश्ते भी इस की हक़ीक़त को समझने से क़ासिर होते हैं कि दरअसल इस तूफ़ान बेतमीज़ी का मुहर्रिक कौन है और वह कौन सा क़िला सुरक्षा का है जो इस ज़ुलम से धरती को पाक करेगा। इसलिए अल्लाह तआला का मुख़्तसर-सा जवाब फ़रिश्तों को खामोश करने वाला था कि إِنِّي أَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُونَ कि निसन्देह मैं वह सब कुछ जानता हूँ जो तुम नहीं जानते हो।

तारीख़-ए-आलम गवाही देते हुए बोलती है कि फिर अल्लाह तआला की तक़दीर ने ख़िलाफ़त आफ़ियत का हिसार के मज़मून को अपनी ग़ालिब क़ुदरत के अजीब दर अजीब ज़हूर से इस क़दर स्पष्ट और रोशन कर दिया कि फिर क्या जिन् और इन्स, और क्या फ़रिश्ते सब को अपनी कमी का एतराफ़ करते

हुए सजदा करना पड़ा।

यह मज़मून ऐसा नहीं कि एक प्राचीन किस्सा हो बल्कि ऐसा जारी व सारी बहता हुआ है कि जिस का कोई किनारा नहीं और अल्हम्दोलिल्ला हम वह ख़ुश-क़िस्मत जमाअत हैं जो ख़िलाफ़त के फ़्यूज़-ओ-बरकात और इस की आफ़ियत का हिसार होने के ईमान अफ़रोज़ नज़ारों के आखों देखे गवाह हैं और हर समय उस के निशानात को देख रहे हैं।

एहसान उसके हम पर हैं बे हद व बे-करॉं
जो गिन सके उन्हें, नहीं ऐसी कोई ज़बां

ख़िलाफ़त का निज़ाम एक बहुत ही मुबारक निज़ाम है। जिसके ज़रीया आफ़ताब नबुव्वत के ज़ाहिरी डूबने के बाद अल्लाह-तआला नबुव्वत के चाँद की रोशीनी के निकलने का इंतेज़ाम फ़रमाता है और ऐसी जमाअत को इस धक्के के असरात से बचा लेता है जो नबी की वफ़ात के बाद नव निर्मित जमात पर एक भारी मुसीबत के तौर पर अवतरित होती है।

निज़ाम-ए-ख़िलाफ़त वह बा बरकत आसमानी निज़ाम-ए-क़ियादत है जो अल्लाह-तआला मोमिनीन कि जमाअत को उनकी रुहानी बका और तरक़्क़ी के लिए अता फ़रमाता है। यह एक अज़ीम इनाम है जो ईमान और अमल-ए-सालेह की बुनियादी शरायत से वंचित है। इस ख़ुदाई मोहब्बत की हैसियत एक अल्लाह की रस्सी की है। इस ख़ुदाई रस्सी को मज़बूती से थामे रखना मोमेनीन की जमाअत के लिए उनके ईमान की तसदीक़ भी है और अमन-ओ-अमान और रुहानी प्रगति की भी।

हज़रात!आज हम देखते हैं कि दुनिया ख़तरात-ओ-मसायब से घिरी हुई है। वर्तमान समय का नक़्शा खींचते हुए हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने समय से पूर्व ही स्पष्ट शब्दों में ऐलान कर दिया कि :

"हे यूरोप तू भी अमन में नहीं और हे एशिया तू भी सुरक्षित नहीं। और हे द्वीपों के रहने वालो कोई बनावटी ख़ुदा तुम्हारी सहायता नहीं करेगा। मैं शहरों को गिरते देखता हूँ और आबादियों को वीरान पाता हूँ। वह वाहिद यगाना एक मुद्दत तक ख़ामोश रहा और उसकी आँखों के सामने मकरूह काम किए गए और वह चुप रहा परंतु अब वह हैबत के साथ अपना चेहरा दिखलाएगा जिसके कान सुनने के हों सुने कि वह वक़्त दूर नहीं। मैंने कोशिश की कि ख़ुदा की अमान के नीचे सबको जमा करूँ पर आवश्यक था कि तक़दीर के नविश्ते पूरे होते। मैं सच्च सच्च कहता हूँ कि इस मुल्क की नौबत भी क़रीब आती जाती है नूह का ज़माना तुम्हारी आँखों के सामने आ जाएगा और लूत की ज़मीन का वाक़िया तुम बचश्म ख़ुद देख लोगे। परंतु ख़ुदा ग़ज़ब में धीमा है तौबा करो ता तुम पर रहम किया जाए जो ख़ुदा को छोड़ता है वह एक कीड़ा है न कि आदमी और जो इस से नहीं डरता वह मुर्दा है न कि ज़िंदा।"

(हकीकतुल वह्यी, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 22 पृष्ठ 268)

आज मानवजाति की हालत و کنتم علی شفا حفرۃ من النار जैसी है कि दुनिया इस वक़्त एक बहुत बड़ी तबाही के किनारे पर खड़ी है। आज दुनिया में एक बेचैनी और ख़ौफ़ की फ़िज़ा है और जंग के बादल

मंडला रहे हैं। आलम-ए-इन्सानियत को इस वक़्त दीगर दुनियावी ज़रूरीयात के साथ साथ अमन-ओ-शांति और ख़ैर-ओ-आफ़ियत की जिस क़दर ज़रूरत है वह शायद इस से क़बल कभी नहीं रही। तीसरी आलमी जंग के ख़तरात पैदा हो चुके हैं। इस सूरत-ए-हाल में दुनिया में इन्सानियत का हमदरद और उसकी बेलौस ख़िदमत और इस की ख़ैर-ओ-आफ़ियत के लिए दुआएं करने वाला एक मुक़द्दस आसमानी निज़ाम ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया है। आज दुनिया में अमन शांति की जिस क़दर कोशिशें ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया ने की हैं इसकी कोई नज़ीर मौजूद नहीं है। हमारे प्यारे इमाम हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का वजूद ही है जो दुनिया को तीसरी आलमी जंग के बारे में लंबे समय से लगातार ख़बरदार कर रहा है। अमन, सुलह जोई और आश्ती की कोशिशें करने वाला एक ही आलमी राहनुमा है और हमारी ख़ुशक़िसमती है कि हम उसके मानने वाले हैं। परंतु वे जो उसे नहीं मानते, वह उन के लिए भी ऐसे ही दर्द रखता और दुआएं करता है और उनके लिए भी ख़ैर चाहता है क्योंकि इस ज़माना में सिर्फ और सिर्फ ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया ही है जो आफ़ियत का किला है।

आज जब नास्तिकता चरम पर है और लोग अपने ख़ालिक़, अपने पैदा करने वाले को भूल रहे हैं और उसकी वजह से इन्फ़रादी-ओ-इजतेमाई बे अमनी और बे-सुकूनी का शिकार हो रहे हैं, हमारे प्यारे इमाम दुनिया को हक़ीक़ी हिसार-ए-आफ़ियत अर्थात ख़ुदा तआला को पहचानने की तरफ़ ध्यान दिलवा रहे हैं। हुज़ूर अनवर ने मुतअद्दिद फ़ोर्मज़ पर क़ुरआनी और तारीख़ी मिसालें देकर साबित फ़रमाया है कि दुनिया में हक़ीक़ी और पायदार अमन का क़ियाम ख़ुदा तआला की ज़ात को पहचानने और उसके हुक़ूक़ अदा करने, हुक़ूकुल-ईबाद की अदायगी और क़ियाम-ए-इन्साफ़ से मशरूत है। सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने जलसा जर्मनी 2022 ई. के अवसर पर इरशाद फ़रमाया कि :

"अत: हक़ीक़ी अमन दुनिया में लाने के लिए यही अक़ीदा और इस पर अमल कारगर होगा कि दुनिया का एक ख़ुदा है जो यह चाहता है कि सब लोग अमन में रहें। हक़ीक़ी अमन उस वक़्त तक क़ायम नहीं हो सकता जब तक एक बाला हस्ती को तस्लीम न किया जाए, जब तक उसकी मुहब्बत दिल में पैदा न हो और यह अक़ीदा कि अल्लाह तआला अमन देने वाला है सिर्फ इस्लाम ने ही आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़रीया पेश किया है। अमन उस वक़्त तक क़ायम हो ही नहीं सकता जब तक लोगों के अंदर हक़ीक़ी मुवाख़ात पैदा न हो और हक़ीक़ी मुवाख़ात एक ख़ुदा को माने बग़ैर पैदा नहीं हो सकती।"

सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दुनिया के मुख़्तलिफ़ सरबराहान मुल्क को भी क़ियाम-ए-अमन की तरफ़ अपने ख़ुतूत के ज़रीया तवज्जा दिलाई है।

तिथि 8 मार्च 2012 ई. को हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अमरीका के सदर बाराक ओबामा को मुख़ातब करते हुए फ़रमाया :

"दुनिया में अमन-ओ-अमान की बिगड़ती हुई सूरत-ए-हाल को देखते हुए मैंने यह ज़रूरी महसूस किया कि आपकी तरफ़ यह ख़त रवाना करूँ क्योंकि आप संयुक्त राज्य अमेरिका के सदर के मन्सब पर फ़ायज़ हैं और यह ऐसा मुलक है जो सुपर पावर है .. मेरी आप से बल्कि समस्त आलमी लीडरों से यह दरख़ास्त है

कि दुनिया में अमन के क़ियाम के लिए अपना किरदार अदा करें ... अल्लाह तआला आपको और समस्त आलमी लीडरों को यह पैग़ाम समझने और इस पर अमल करने की तौफीक बख़्शे।"

इसी तरह सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने कलीदी ख़िताब, यार्क यूनीवर्सिटी के अवसर पर, ओंटेरियो, कैनेडा, में फ़रमाया :

"यदि हम हक़ीक़ी तौर पर शांति क़ायम करना चाहते हैं तो हमें इन्साफ़ से काम लेना होगा। हमें अदल और मुसावात को एहमियत देनी होगी। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने क्या ही ख़ूबसूरत फ़रमाया है कि दूसरों के लिए वही पसंद करो जो अपने लिए पसंद करते हो। हमें केवल अपने फ़ायदे के लिए नहीं बल्कि बड़े दिल से काम लेते हुए दुनिया के फ़ायदे के लिए काम करना होगा। इस ज़माना में हक़ीक़ी अमन के क़ियाम के यही माध्यम हैं।" (तिथि 28 अक्तूबर 2016 ई. यार्क यूनीवर्सिटी, ओंटेरियो, कैनेडा)

ख़िलाफ़त के ज़ेरे साया हिसार-ए-आफ़ियत में आने की एक मिसाल यह भी है कि कोरोना महामारी के फूटने के बाद दुनिया के अक्सर मज़हबी हलक़े जो सामूहिक इबादत करते हैं असमंजस का शिकार हो कर इफ़रात-ओ-तफ़रीत में मुबतला नज़र आए। मुसलमान फिरकों में मस्जिद की जगह घरों में पांच समय नमाज़ और नमाज़-ए-जुमा की अदायगी से मुतल्लिक़ बहसें छिड़ गईं और कई जगह तो नौबत झगड़ों तक पहुंची। कुछ ने ऐसी ज़्यादती की कि बावजूद रुख़स्त के मस्जिद में हाज़िर हो कर बिना एहतेयात बाजमाअत नमाज़ अदा करना ज़रूरी क़रार दिया और नतीजतन नुक़्सान उठाया और कुछ ऐसे थे कि एहतियात के नाम पर इबादात को ही तर्क कर बैठे। लेकिन इमाम जमाअत अहमदिया ने 27 मार्च 2020 ई. को अपने दफ़्तर से नशर किए जाने वाले ख़ुसूसी पैग़ाम में दुनिया-भर के अहमदियों को वबाई हालात में घरों में नमाज़ें और जुमे अदा करने की तलक़ीन फ़रमाई। इस पर ख़लीफ़-ए-वक़्त का दस्त-ओ-बाज़ू, निज़ाम-ए-सिलसिला हरकत में आया और हर मुम्किन ज़रीये से अहमदियों को घरों में इबादात बजा लाने के मसायल सिखा दिए गए। नतीजन हर अहमदी घर बिना देरी किए घरों में इबादात बजा लाने लगा। अल-ग़र्ज़ जहां इमाम-ए-वक़्त को न मानने वाले परेशानी का शिकार हुए वहीं ख़िलाफ़त की बरकत से न ख़ौफ़ और परेशानी पैदा हुई और न ही फ़रायज़ की अंजाम दही में कोताही हुई। ऐसा भला क्यों न होता वे आफ़ियत के हिसार में जो थे।

अत: निज़ाम-ए-ख़िलाफ़त की अगर एक तरफ़ बुनियादें ईमान की मुस्तहकम चट्टान पर क़ायम हैं तो दूसरी तरफ़ उसकी फ़सीलें अर्श के रब को छू रही हैं। जहां ख़ुदा तआला की ताईद-ओ-नुसरत और हिफ़्ज़-ओ-अमान के जल्वे हर वक़त प्रकट होते हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की दुआओं के नतीजा में और आपके तसल्ली और हौसला देने वाले अल्फ़ाज़ के ज़रीया से अफ़राद-ए-जमाअत को इतमेनान-ए-क़लब हासिल होता है और उनको अमन-ओ-अमान की ज़मानत मिलती है। श्रीमान मुनीर जावेद साहिब प्राईवेट सेक्रेटरी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं :

"4 मई 2006 ई. गुरुवार का दिन था। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने फ़ार ईस्ट देशों के दौरान नांदी फिजी में थे। रात क़रीबन अढ़ाई बजे का वक़्त था कि रबवाह ,लंदन और दुनिया के विभिन्न देशों से फ़ोन आने शुरू हो गए कि इस वक़्त टीवी पर जो ख़बरें आ रही हैं उनके मुताबिक़ एक

बहुत बड़ा सूनामी तूफ़ान फिजी के साथ TONGA द्वीप में आया है और यह तूफ़ान ताक़त के लिहाज़ से इंडोनेशिया वाले सूनामी से बड़ा है जिसने लाखों लोगों को खत्म कर दिया था। और दुनिया के कई देशों में तबाही मचाई थी। जब TV ऑन किया तो ये ख़बरें आ रही थीं कि यह सूनामी लगातार अपनी शिद्दत और ताक़त में बढ़ रहा है और सुबह के वक़्त नांदी फिजी का सारा इलाक़ा ग़र्क़ कर देगा। सुबह साढ़े चार बजे जब हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ नमाज़-ए-फ़ज्र की अदायगी के लिए तशरीफ़ लाए तो हुज़ूर अनवर की ख़िदमत में इस तूफ़ान के बारे में रिपोर्ट पेश हुई और जो पैग़ामात ख़ैरीयत दरयाफ़त करने के लिए फ़ोन पर मौसूल हो रहे थे उनके मुताल्लिक़ बताया गया। हुज़ूर अनवर ने नमाज़-ए-फ़ज्र पढ़ाई और बड़े लंबे सज्दे किए और ख़ुदा के हुज़ूर मुनाजात कीं। नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर मसीह के ख़लीफ़ा ने अहबाब-ए-जमाअत को संबोधित हो कर फ़रमाया कि फ़िक्र न करें अल्लाह तआला फ़ज़ल फ़रमाएगा कुछ नहीं होगा। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ वापस तशरीफ़ ले आए। वापस आकर जब हम ने TV ऑन किया तो TV पर यह ख़बरें आना शुरू हो गईं कि इस सुनामी का ज़ोर टूट रहा है और आहिस्ता-आहिस्ता उसकी शिद्दत ख़त्म हो रही है। फिर क़रीबन दो अढ़ाई घंटे के बाद यह ख़बरें आ गईं कि इस तूफ़ान का वजूद ही मिट गया है। अत: इस दुनिया ने अजीब नज़ारा देखा कि वह सूनामी जिसने अगले चंद घंटों में लाखों लोगों को ग़र्क़ करते हुए सारे इलाक़ा को सफ़ा हस्ती से मिटा देना था ख़लीफ़-ए-वक़्त की दुआ से चंद घंटों में ख़ुदा ने उसका वजूद मिटा दिया। उस रोज़ फिजी के अख़बारों ने यह ख़बरें लगाईं कि सूनामी का टल जाना किसी चमत्कार से कम नहीं।''

सूरत अल-नूर आयत नम्बर 56 आयत इस्तख़लाफ़ में अल्लाह तआला ने ख़िलाफ़त की जिन नेअमतों का वर्णन किया है इस में ये भी वर्णन फ़रमाया है कि और उन की ख़ौफ़ की हालत के बाद ज़रूर उन्हें अमन की हालत में बदल देगा। अर्थात अल्लाह तआला का यह भी वादा है कि इन अज़ीमुश्शान नेअमतों की बरकत से एक तीसरा इनाम उस जमाअत मोमिनीन को यह अता होगा कि जब भी उन्हें किसी वजह से हालत-ए-ख़ौफ़ से गुज़रना पड़ेगा तो अल्लाह तआला उसको हालत अमन में बदल देगा। इसलिए इस ज़िमन में हॉलैंड का एक वाक़िया है

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने ख़ुतबा जुमा 9 दिसंबर 2011 ई. में फ़रमाते हैं ''पिछले दिनों जब मैं यूरोप के दौरे पर गया था तो वापसी पर एक जुमा हॉलैंड में भी पढ़ाया था और वहां मैंने वहां के एक सियास्तदान, मैंबर आफ़ पार्लीमैंट और एक पार्टी के लीडर जिन का नाम ख़ैरत विल्डर है, को यह पैग़ाम ख़ुतबा में दिया था कि तुम लोग इस्लाम के ख़िलाफ़ और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़िलाफ़ जो बुरी भाषा के प्रयोग में बढ़े हुए हो, घटिया किस्म की बातें कर रहे हो, दुश्मनी में इंतेहा की हुई है। इस चीज़ से बाज़ आओ, नहीं तो उस ख़ुदा की लाठी से डरो जो बे-आवाज़ है जो अपने वक़्त पर फिर तुम जैसों को तबाह-ओ-बर्बाद भी कर दिया करती है। वह ख़ुदा यह ताक़त रखता है कि तुम जैसों की पकड़ करे। मैं ने यह भी कहा था कि हमारे पास ताक़त तो कोई नहीं, हम दुआओं से तुम जैसों का मुक़ाबला करेंगे। इस ख़ुतबा के खुलासे पर मुश्तमिल प्रैस रीलीज़ जो हमारा प्रैस सैक्शन भेजता

है, उनके इंचार्ज जब यह रीलीज़ बना कर मेरे पास लाए तो बाक़ी चीज़ें तो उन्होंने लिखी हुई थीं लेकिन यह फ़िक़रा नहीं लिखा था। फिर उनको मैं ने कहा कि यह फ़िक़रा भी ज़रूर लिखें कि हमारे पास कोई दुनियावी हथियार नहीं है। यही मैं ने कहा था। लेकिन हम दुआ करते हैं कि तुम और तुम जैसे जितने हैं वह फ़ना हो जाएं। और हक़ीक़त भी यही है कि हमारा अपने समस्त मुख़ालेफ़ीन और दुश्मनों से मुक़ाबला या तो दलायल के साथ है या फिर सबसे बढ़कर दुआओं के साथ। बहर हाल यह प्रैस रीलीज़ जो थी, यह ख़ैरत विल्डर जो सियास्तदान है उसने भी पढ़ी और उन्होंने अपनी हुकूमत को ख़त लिखा और हुकूमत से, होम मिनिस्टर से चंद सवाल किए। जब यह वहां प्रैस में आए तो वहां की जमात ने मुझे लिखा कि इस तरह इस ने सवाल किए हैं। लगता था कि जमात वालों को थोड़ी सी घबराहट है। इस पर मैं ने उन्हें कहा था कि अगर होम ऑफ़िस वाले पूछते हैं तो डरने की ज़रूरत नहीं है, परेशान भी होने की ज़रूरत नहीं, खुल कर अपना मत वर्णन करें। बुनियाद तो इस शख़्स ने ख़ुद क़ायम की थी जो ग़लत किस्म की हरकतें कर रहा है। जिसने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ग़लत फिल्में भी बनाई हैं। इंतेहाई सख़्त ज़बान इस ने प्रयोग की थी। इस्लाम को बदनाम किया था। हमने तो उसका जवाब दिया था और यह कहा था कि ख़ुदा तआला अपने नबी की ग़ैरत रखने वाला है और वह पकड़ सकता है। ख़ुदा तआला से डरना चाहिए।

बहरहाल उस ने यह सवाल जो अपनी हुकूमत को भेजे थे, उसके सवालों का कुछ दिनों के बाद हुकूमत ने जवाब भी दिया और यह वहां अख़बार में भी आ गया।

विल्डर ने पहला सवाल यह किया था कि क्या यह आर्टीकल कि World muslim leader sends warning to Dutch politician Geert Wilders आलमी मुस्लमान रहनुमा की हॉलैंड के सियास्तदान ख़ैरत विल्डर को चेतावनी आप अर्थात वज़ारात-ए-दाख़िला हॉलैंड के इलम में है? तो वज़ीर-ए-दाख़िला ने उस को जवाब दिया कि हाँ मुझे इल्म है। यह आर्टीकल मैं ने पढ़ा है।

फिर अगला प्रशन उस का यह था, (मेरा नाम लिया था) कि मिर्ज़ा मसरूर अहमद ने यह कहा है कि तुम सुन लो कि तुम्हारी पार्टी और तुम्हारे जैसा हर शख़्स अंतत: फ़ना होगा। यह विल्डर ने मिनिस्टर को लिखा। फिर आगे उस की तशरीह ख़ुद करते हुए वह लिखता है कि इस मुफ़सिदाना वर्णन पर वज़ारात-ए-दाख़िला इस्लामी तंज़ीम के ख़िलाफ़ क्या क़दम उठाने का इरादा रखती है? डच वज़ीर-ए-दाख़िला ने उत्तर दिया कि प्रैस रीलीज़ के मुताबिक़ मिर्ज़ा मसरूर अहमद ने कहा है कि ऐसे अफ़राद और गिरोह किसी फ़साद या अन्य सैकूलर हर्बों से नहीं बल्कि सिर्फ़ दुआ के ज़रीये हलाक होंगे। इसमें मैं कोई ऐसी बात नहीं देखता जो कि फ़साद को हवा देती हो या बायस-ए-फ़साद हो। इसलिए मुझे कोई वजह नज़र नहीं आती कि मैं अहमदिया मुस्लिम जमात के ख़िलाफ़ कोई क़दम उठाऊँ। फिर तीसरा सवाल उस ने किया था कि अहमदिया मुस्लिम कम्यूनिटी हॉलैंड का वैश्विक अहमदिया मुस्लिम जमाअत और मसरूर अहमद से क्या ताल्लुक़ है? इसका डच वज़ीर ने जवाब दिया कि अहमदिया मुस्लिम जमात हॉलैंड, वैश्विक अहमदिया मुस्लिम जमाअत का ही एक भाग है।''

अत: ख़िलाफ़त वह क़िला है जिसकी दीवारें हर प्रकार के डर या भी से ऊंची हैं। वह भी चाहे

मुनाफ़क़त का हो या शत्रुता का, जंग का हो या सियासत का, किसी गिरोह की तरफ़ से हो या बादशाहत की तरफ़ से, हर हाल में ख़िलाफ़त अमन के हिसार का निशान है। बड़ी से बड़ी हुकूमत भी इस को नुक़्सान नहीं पहुंचा सकती बल्कि तारीख़ गवाह है कि जो हुकूमत भी ख़िलाफ़त से टकराई, टुकड़े टुकड़े हो गई। ख़िलाफ़त एक ऐसा ज़िंदा वृक्ष है कि जो इस से जुड़ा रहता है चाहे वह ख़ुतूत के ज़रीया ही हो चाहे वह हुज़ूर के लिए दुआएं करके अपने आपको हुज़ूर की मज्लिस में रखे तो अल्लाह तआला उस को आफ़ियत के हिसार में रखता है।

एवरी कोस्ट के एक नौजवान पायलट एक साल के कोर्स के लिए बेलजीयम आए हुए थे। यहां हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से शरफ़-ए-मुलाक़ात हासिल किया और उन्हों ने बताया कि उन्हें जो पायलट बनने के लिए मुंतख़ब किया गया है वह हुज़ूर अनवर की दुआओं के तुफ़ैल है। वाक़िया इस तरह हुआ कि वह कुछ वर्ष पूर्व जब जलसा सालाना आवरी कोस्ट में शामिल हुए तो वहां उनके दोस्त ने उनसे कहा कि मैंने एक विज्ञापन देखा कि एवरी कोस्ट लोगों को अपनी सर्विस में लेने के लिए मुक़ाबला करवा रही है। लेकिन फाईल जमा करवाने की तारीख़ गुज़र गई है। मौसूफ़ बताते हैं कि बावजूद उस के कि तारीख़ गुज़र गई थी। मैंने हुज़ूर अनवर की ख़िदमत में दुआ के लिए लिखा और साथ ही अपनी फाईल जमा करवा दी। कुछ दिनों बाद उनको जवाब मिला कि जबकि आपने फाईल देरी से जमा करवाई है। लेकिन हम आपको इजाज़त देते हैं कि आप इस मुक़ाबला में हिस्सा लें। इसके बाद उन्होंने इस मुक़ाबला के लिए तहरीरी इमतेहान दिया और एक हज़ार उम्मीदवारों में से सिर्फ पंद्रह उम्मीदवार मुंतख़ब हुए। जिनमें उनका नाम भी शामिल था। उन्हों ने कहा यह सब कुछ हुज़ूर अनवर की दुआओं के तुफ़ैल हुआ। (उद्धृत अल् फ़ज़ल इंटरनैशनल 25 अक्तूबर 2019 पृष्ठ 20)

जर्मनी से एक तिफ़्ल ने इस बात का इज़हार किया है। कहते हैं मैंने अपने प्यारे हुज़ूर की ख़िदमत में एक दुआ की दरख़ास्त की कि अल्लाह तआला मेरे ख़ानदान को हर किस्म के मसायल से निकाले और किसी को किसी किस्म की परेशानी न रहे। तो कहते हैं उस वक़्त मेरे एक अंकल अकेले पाकिस्तान में रहते थे, सारे रिश्तेदार बाहर थे और बड़े मसायल में घिरे हुए थे। कोई जानने वाला पास न होने की वजह से हर वक़्त परेशान भी रहते थे तो मैंने उस वक़्त हुज़ूर की ख़िदमत में उनकी ख़ातिर एक दुआ का ख़त लिखा तो हालात ने अजीब पल्टा खाया। चंद दिनों के अंदर अंदर अंकल का नार्वे से रिश्ता आया। वह रिश्ता तै पाया और वह अंकल अल्लाह के फ़ज़ल से नार्वे आए और अब वहां अपने बीवी बच्चों और फ़ैमिली के साथ हंसी ख़ुशी ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं। यह ख़िलाफ़त की बरकतें हैं, यह तस्कीन-ए-जान के समान हैं।

कैनेडा की डरहम (Durham) जमात से एक महिला ने एक मुरब्बी साहिब को अपना वाक़िया सुनाया। यह वाक़िया भी बहुत दिलचस्प है। इस में वह कहती हैं कि चंद साल पहले हमारी घरेलू ज़िंदगी में बहुत उतार चढ़ाओ आए और आपस में इस क़दर शदीद इख़तेलाफ़ात पैदा हो गए कि मैं ने यह फ़ैसला कर लिया कि मैंने इस बंदे के साथ नहीं रहना और मैंने अब अलैहदा होना है। इसी दौरान हुज़ूर का कैनेडा का दौरा आ गया। हुज़ूर तशरीफ़ लाए। मैंने भी मुलाक़ात की दरख़ास्त की और मुलाक़ात में हाज़िर हुए तो मैंने

यह सारी सूरत-ए-हाल, कैफियत वर्णन की और बच्चों के लिए दुआ की दरख़ास्त की और हुज़ूर की ख़िदमत में फ़ैसला भी सुना दिया कि मैंने तो अलैहदगी का फ़ैसला कर लिया है। हुज़ूर ने फ़रमाया तुम्हारा पति क्या कहता है? तो महिला कहती हैं मैंने कहा वह तो सुलह की तरफ़ मायल है लेकिन मैंने बस अब आख़िरी फ़ैसला कर लिया है, कोई सुलह नहीं, कोई वापसी नहीं। हुज़ूर ने उस वक़्त फ़रमाया अगर वह सुलह की तरफ़ मायल है तो सुलह कर लो। सब ठीक हो जाएगा इंशा अल्लाह। कहती हैं कि यह अजीब है कि मैंने अर्ज़ किया कि मैंने फ़ैसला कर लिया है, सब कुछ ख़त्म हो गया है और हुज़ूर फ़र्मा रहे हैं कि नहीं सुलह कर लो सब ठीक हो जाएगा इंशा अल्लाह। तो कहती हैं अब मेरे सामने सिवाए स्वीकार करने के कोई चारा नहीं था। मैंने मुलाक़ात से निकल कर ख़ुद ही ख़ावंद को फ़ोन किया और उससे सुलह कर ली। अल्लाह तआला ने हुज़ूर के इन शब्दों में ऐसी तसकीन रखी और उन अलफ़ाज़ को ऐसी बरकत बख़शी कि इस सुलह के बाद हमारी ज़िंदगी ही बदल गई है। अब हमारे मध्य एक ऐसे प्यार और मुहब्बत के ताल्लुक़ की बुनियाद पड़ गई है कि ऐसे लगता है जैसे हर-रोज़ हमारी शादी हो रही है। काश वे लोग जो ख़िलाफ़त की इस नेअमत से वंचित हैं वे ये समझ सकें कि ऐसे मवाक़े पर जब उन्हें समझाने वाला, उन के लिए दुआएं करने वाला और उनको तसकीन के कलिमात अता करने वाला कोई नहीं होता तो अहमदियों के पास उनका ख़लीफ़ा होता है जो एक अज़ीमुश्शान नेअमत की तरह मयस्सर है और यह ख़िलाफ़त-ए-हक़्क़ा इस्लामिया अहमदिया की नेअमत है और यही नेअमत वजह-ए-तस्कीन है।

हज़रात! हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दुनिया के बेशुमार मुल्कों के ऐवानों में ख़ुद जाकर इस्लाम की शांतिप्रिय शिक्षाओं के बारे में बहुत प्रभावी खुत्बात फ़रमाए। उनकी वजह से आपको "अमन के सफ़ीर" का ख़िताब दिया गया है। असंख्य लोगों ने स्वीकार किया है कि हुज़ूर की ज़बान-ए-मुबारक से इस्लाम का परिचय सुन कर आपकी आवाज़ हमारे दिल में घर कर गई है और हमारे दिल-ओ-दिमाग़ इस्लाम की तालीम से सरशार हो गए हैं। सिर्फ एक एतराफ़ पेश करता हूँ:

2012 ई. में हुज़ूर अनवर ने बरसल्ज़ में यूरोपीयन पार्लीमेंट से ख़िताब फ़रमाया। इस अवसर पर Bishop Dr Amen Howard जिनेवा (स्विट्ज़रलैंड) से हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला के ख़िताब में शमूलियत के लिए आए थे, उन्होंने अपने ख़्यालात का इज़हार जिन शब्दों में किया वे ध्यान से सुनने वाले हैं। उन्होंने कहा :

"यह व्यक्ति जादूगर नहीं लेकिन इनके शब्द जादू जैसा सा असर रखते हैं। लहजा धीमा है लेकिन उनके मुँह से निकलने वाले शब्द ग़ैरमामूली ताक़त, शौकत और असर अपने अंदर रखते हैं। इस तरह का साहसी इन्सान मैंने अपने ज़िंदगी में कभी नहीं देखा। आपकी तरह के सिर्फ तीन इन्सान इस दुनिया को मिल जाएं तो अमन शांति के हवाले से इस दुनिया में हैरत-अंगेज़ इन्क़िलाब महीनों नहीं बल्कि दिनों के अंदर बरपा हो सकता है और यह दुनिया अमन और भाई चारा का गहवारा बन सकती है।" (अहमदिया गज़्ट कैनेडा मई 2018 ई., पृष्ठ 20)

ख़िलाफ़त की महान बरकात में से चंद एक का वर्णन ही संभव है। ख़िलाफ़त की महान नेअमत के शुक्राने और इस अज़ीमुश्शान हिसार-ए-आफ़ियत से फ़ैज़ पाने के लिए हम सबको अपनी अपनी जगहों पर

छोटे छोटे अमन के गहवारे पैदा करने होंगे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला अपने ख़ुतबात-ओ-खिताबात में हमें बहैसियत हर दो इन्फ़रादी-ओ-इजतेमाई अल्लाह तआला के हुक़ूक़ अदा करने, अल्लाह के बंदों के हुक़ूक़ अदा करने, ख़ुदा तआला पर तवक्कुल करने, दुआओं की तरफ़ ख़ास तवज्जा करने, हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत के तक़ाज़ों को पूरा करने, अपने अंदर पाकीज़ा अमली तबदीली पैदा करने, अपने घरवालों से हुस्न-ए-सुलूक करने, अपनी आने वाली नसल की उम्दा तर्बीयत करने के साथ साथ हर अमल सालेह बजा लाने की तरफ़ बार-बार तवज्जा दिलाते हैं। अगर हम सब सिदक़-ए-नीयत से उन नसाएह पर अमल करने की कोशिश करें तो अल्लाह तआला ज़रूर हमारी कोशिशों पर प्यार की नज़र डालते हुए हमें उनका पालन करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाएगा और हम सब अपने अपने दायरा, अपने अपने यूनिट में हक़ीक़ी अमन-ओ-आफ़ियत के सफ़ीर बन जाऐंगे और जिस समाज की बुनियादी इकाई यानी फ़र्दे वाहिद अपनी ज़िम्मेदारियों को समझते हुए उच्च आचरण अपना ले वह समाज अख़लाक़ी बुलंदियों को छूते हुए हक़ीक़ी इन्क़िलाब का पेश-ख़ेमा साबित होता है। वह समाज बजा-ए-ख़ुद आफ़ियत का हिसार बन जाता है जिसमें बसने वाला हर फ़र्द दरिंदों से महफ़ूज़ शुमार किया है।

अल्लाह तआला हमें ख़िलाफ़त की लाज़वाल नेअमत का शुक्राना अदा करने और ख़लीफ़-ए-वक़्त का हक़ीक़ी आज्ञाकारी बनने की तौफ़ीक़ अता करे आमीन।

हमारी जां ख़िलाफ़त पर फ़िदा है — यह रुहानी मरीज़ों की दवा है
अंधेरा दिल का इस से मिट गया है — यही ज़ुलमात में शमे हुदा है
हिसार-ए-अमन-ओ-ईमान-ओ-यक़ीं है — किनार-ए-आफ़ियत हबलुल मती है

(وآخر دعوانا عن الحمد للہ رب العالمین)

★ ★ ★

Asifbhai Mansoori 9998926311
Sabbirbhai 9925900467

LOVE FOR ALL
HATRED FOR NONE

Your's
CAR SEAT COVER

Mfg. All Type of Car Seat Cover

E-1 Gulshan Nagar, Near Indira Nagar
Ishanpur, Ahmadabad, Gujrat 384043

LIYAKAT ALI
Ph. 9899221402
9899221457

FENLEYROSH

Fenley Rosh Healthcare Pvt. Ltd.
Frequentideas Group City Quay
Liverpool L3 4fD United Kingdom
c-5/1015.2ndfloor,
opposite CISF Group Center
New Vasant Kunj, Road, New Delhi-37
011-3231790

www.fenleyrosh.com | info@fenleyroshhealthcare.com

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

SAKTI BALM

INDICATION: SHAKTI BALM GIVES RELIEF FROM STRAINS CUT, LUMBAGO COUGHS, COLD, HEADACHE AND OTHER ACHESAND PAINS FOMENTATION OF THE AFFECTED PART HELPS TO RELIFE PAIN QUICKLY.

AYURVEDIC PAIN BALM
Prop: SK.HATEM ALI

ALL INDIA AVAILABLE

SOUTH 24 PARGANA, DIAMOND HARBOUR, WEST BENGAL

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

RSB Traders & whole seller

Specialist in Teddy Bear Ladies & Kids items, All Types of Bags & Garments items

Mob: 9647960851
9082768330

Branch: Aroti Tola Po muluk Bolpur-Birbhum
Head office: Q84 Akra Road Po.Bartala, Kolkata-18

INDIA MOVES ON EXIDE

M.S.AUTO SERVICE
2-423/4 Bharath Building
Railway Station Road Kachegud
Hyderabad.500027(T.s)

Cell :9440996396,9866531100

METRO PLASTIC PRODUCTS

YUBA

QUALITY FOOTWEAR

E-mail:yuba.metro@yahoo.com

{AN ISO 9001:2008 CERTIFIED COMPANY}

H.O & FACTORY :20 A RADHANATH CHOUDHURAY ROAD
KOLKATA700015,PH:2328-1016

Fawad Anas Ahmed

GOLDEN GROUP REAL ESTATE

दुआओं का आवेदक

DISTT. YADGIR - 585 201
KARNATAKA
Ph. : 9480172891

अरबईन नम्बर-2

संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमात, हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी की कलम से

अनुवादक : इब्नुल मेहदी लईक एम ए

رب اغفر ذنوبنا واهد قلوبنا انك الذّ الاشياء ان يُسْقَ ٭جرعة من عرفانك ولا يُسْقٰى الّا بفضلك وامتنانك۔ ربّ انّی
اشکو الیٰ حضرتك من مصيبةٍ نزلت علىٰ هٰذه الامة من انواع الفتن والتفرقة۔ ربّ اَدْرِك فاِنّ القوم مُدْرَكون۔

चूंकि मनुष्य ख़ुदा तआला की इबादत (उपासना) और उसे पहचानने के लिए पैदा किया गया है। इसलिए ख़ुदा तआला चाहता है कि लोग उस की इबादत और उसे पहचानने में उन्नति करें और जब कभी कोई ऐसा युग आ जाता है कि अधिकतर प्रजा के गिरोह संसार की ओर आकृष्ट हो जाते हैं तथा संसार से हृदय लगाते और उसके प्रेम में लिप्त हो जाते हैं तथा ख़ुदा तआला के प्रेम, निष्कपटता, और हृदयों से रुचि समाप्त हो जाती है और ख़ुदा को पहचानने के मार्ग लुप्त हो जाते हैं तथा ख़ुदा के पहले निशान जो उसके पवित्र नबियों द्वारा प्रकट हुए थे या तो मात्र कथाओं और कहानियों के समान माने जाते हैं और हृदयों के परिवर्तन एवं ख़ुदा की ओर तन्मय होने और शुद्धता उन से प्राप्त नहीं होती अपितु उन का कुछ भी भय और महानता हृदयों में शेष नहीं रहती या वे केवल झूठे समझे जाते हैं और उन पर अपहास और उपहास किया जाता है जैसा कि आज कल के नेचरी लोग या ब्रह्म समाजी लोगों में से अधिकांश लोग ऐसा ही विचार करते हैं। इसलिए ऐसे समय में जब ख़ुदा को पहचानने का प्रकाश कम होते-होते अन्ततः हज़ारों तामसिक अंधकारों के पर्दे में छुप जाता है अपितु अधिकतर लोग नास्तिकता के रंग में रंगीन हो जाते हैं तथा पृथ्वी पाप, लापरवाही और धृष्टता से भर जाती है, ख़ुदा तआला का स्वाभिमान, प्रताप और सम्मान मांग करते हैं कि वह स्वयं को पुनः लोगों पर प्रकट करे। अतः जैसा कि अनादि काल से उसका नियम है हमारे इस युग में जो उसी प्रकार की परिस्थितियां अपने अन्दर समेटे हुए है, जाते हैं और हृदयों के परिवर्तन एवं ख़ुदा की ओर तन्मय होने और शुद्धता उन से प्राप्त नहीं अपितु उन का कुछ भी भय और श्रेष्ठता हृदयों में शेष नहीं रहती या वे केवल झूठे समझे जाते हैं और उन पर अपहास और उपहास किया जाता है जैसा कि आज कल के नेचरी लोग या ब्रह्म समाजी लोगों में से अधिकांश लोग ऐसे ही विचार करते हैं। इसलिए ऐसे समय में जब ख़ुदा तआला ने मुझे चौदहवीं सदी हिज्री के सर पर (प्रारम्भ में) उस ईमान के नवीनीकरण और ख़ुदा की पहचान कराने के लिए अवतरित किया गया है । उसके समर्थन और कृपा से मेरे हाथ पर आकाशीय निशान प्रकट होते हैं तथा उसके इरादे और हित के अनुसार दुआएं स्वीकार होती हैं और परोक्ष की बातें बताई जाती हैं तथा क़ुर्आन की सच्ची बातें एवं क़ुर्आन के अध्यात्म ज्ञान वर्णन किए जाते तथा शरीअत की कठिनाइयों और आपत्तियों का निवारण किया जाता है। मुझे उस दयालु ख़ुदा की सौगंध है जो झूठ का शत्रु तथा झूठ घड़ने वाले का विनाश करने वाला है कि मैं उसकी ओर से हूँ और उसके भेजने से यथासमय आया हूँ, उसके आदेश से खड़ा हुआ हूँ, वह मेरे प्रत्येक क़दम में मेरे साथ है, वह मुझे नष्ट नहीं करेगा और न मेरी जमाअत को विनाश में डालेगा

जब तक वह अपना समस्त कार्य पूर्ण न कर ले जिसका उसने इरादा किया है। उसने मुझे चौदहवीं सदी के सर पर प्रकाश को पूर्ण करने के लिए अवतरित किया तथा उसने मेरी सच्चाई के लिए रमज़ान में सूर्य और चन्द्र ग्रहण प्रकट किए तथा पृथ्वी पर बहुत से स्पष्ट निशान दिखाए जो सत्याभिलाषी के लिए पर्याप्त थे। इस प्रकार उसने अपना समझाने का अन्तिम प्रयास पूर्ण कर दिया। कोई व्यक्ति वास्तविक तौर पर मुझ पर कोई आरोप नहीं लगा सकता और न मेरे कुछ आकाशीय निशानों पर कोई प्रतिप्रश्न कर सकता है, क्योंकि वह मुझ पर कोई ऐसी आलोचना नहीं कर सकता और न मेरे आसमानी निशानों पर मीन-मेख कर सकता है कि वही मीन-मेख पहले नबियों पर शत्रुओं से नहीं की जिनकी वास्तविकता को उन मूर्ख धर्म संबंधी पक्षपातियों ने नहीं समझा। यदि मेरे विरोधियों में लेश मात्र भी सच्चाई है तो वे आराम से कुछ सभ्य और प्रतिष्ठित लोगों की एक छोटी सी सभा आयोजित करके कुछ बातें मेरे समक्ष प्रस्तुत करें जो उनकी दृष्टि में दोष में सम्मिलित हैं अथवा कुछ ऐसी भविष्यवाणियां प्रस्तुत करें जो उनके निकट पूरी नहीं हुईं, परन्तु वे बातें ऐसी हों जो नबियों की जीवनी या उनकी भविष्यवाणियों में उनका उदाहरण न मिल सके। परन्तु स्मरण रहे कि यदि वे ऐसी सभ्य एवं बुद्धिमानों की सभा में यह निर्णय करना चाहें तो अवश्य सिद्ध हो जाएगा कि वे केवल मिथ्यारोपण और झूठ गढ़ने वाले हैं, पीठ पीछे बात करना तो केवल पिशुनता कहलाती है इस से अधिक नहीं और इस से कुछ सिद्ध नहीं होता, क्योंकि इसमें चुग़ली करने वाले के लिए अकेला होने के कारण प्रत्येक झूठ तथा झूठ बनाने की बहुत गुंजायश होती है। अत: नि:संदेह ऐसी चुग़ली जिस सभा में सुनी जाती है वह ख़ुदा तआला के निकट सदात्माओं की सभी नहीं है। यदि मनुष्य अपने हृदय में सत्य की अभिलाषा रखता है तो जो बात उसकी समझ में न आए उसे पूछ लेना चाहिए। यदि मुझ पर यह आरोप लगाया जाए कि मेरी कोई भविष्यवाणी पूरी नहीं हुई या पूरा होने की आशा जाती रही तो यदि मैंने नबियों की भविष्यवाणियों के सन्दर्भ में यह सिद्ध न कर दिया कि वास्तव में वे समस्त भविष्यवाणियां पूर्ण हो गई हैं या कुछ प्रतीक्षा योग्य हैं और वे उसी प्रकार की हैं जैसी कि नबियों की भविष्यवाणियां थीं तो नि:सन्देह मैं प्रत्येक सभा में झूठा ठहरूंगा, परन्तु यदि मेरी बातें नबियों की बातों के समान हैं तो जो मुझे झूठा कहता है उसे ख़ुदा तआला का भय नहीं है। कुछ अज्ञानी मुझ पर एक आरोप यह भी लगाते हैं कि इस व्यक्ति की जमाअत इस पर अलैहिस्सलातो वस्सलाम का वाक्य चरितार्थ करते हैं और ऐसा करना अवैध है।

इसका उत्तर यह है कि मैं मसीह मौऊद हूँ तथा दूसरों का सलात या सलाम कहना तो एक ओर स्वयं आँहज़रत (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया है कि जो व्यक्ति उसे पाए मेरा सलाम उसे कहे। हदीसों और हदीसों की समस्त व्याख्याओं में मसीह मौऊद के बारे में सैकड़ों स्थान पर सलात और सलाम का शब्द लिखा हुआ मौजूद है। अत: जबकि मेरे संबंध में नबी करीम (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने यह वाक्य कहा, सहाबा ने कहा अपितु ख़ुदा ने कहा तो मेरी जमाअत का मेरे बारे में यह वाक्य बोलना क्यों अवैध हो गया। स्वयं सामान्यतया समस्त मोमिनों के बारे में क़ुर्आन करीम में सलात और सलाम दोनों शब्द आए हैं और मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी विरोधियों के सरदार ने जब बराहीन

अहमदिया की समीक्षा लिखी उस से पूछना चाहिए कि कथित पुस्तक के पृष्ठ-242 में उसने यह इल्हाम लिखा हुआ पाया या नहीं

اصحاب الصُفّة۔ وما ادراك ما اصحاب الصُفّة ترٰی اعینھم تفیض من الدمع۔ یصلّون علیك۔

ربّنا اننا سمعنا منادیا ینادی للایمان وداعیا الی اللّٰہ وسراجًا مُنیرا۔

अनुवाद- यह है कि- स्मरण कर सुफ़्फ़ा में रहने वाले और तू क्या जानता है कि किस श्रेणी के लोग और किस पूर्ण स्तर की श्रद्धा रखने वाले हैं। सुफ़्फ़ा के रहने वाले तू देखेगा कि उनकी आँखों से आँसू जारी होंगे और तुझ पर दुरूद भेजेंगे[1]★ और कहेंगे- हे हमारे ख़ुदा! हमने एक आवाज़ देने वाले को सुना अर्थात् हम उस पर ईमान लाए और उसकी बात सुनी। उसकी यह आवाज़ है कि ख़ुदा पर अपने ईमानों को सुदृढ़ करो। वह ख़दा की ओर बुलाने वाला और चमकता हुआ दीपक है। अब देखो कि इस इल्हाम में नेक लोगों का यह लक्षण रखा है कि वे मुझ पर दरूद भेजेंगे। मौलवी मुहम्मद हुसैन कि यदि यह आरोप का स्थान था तो उसने समीक्षा लिखते समय क्यों आपत्ति न की, अपितु इस इल्हाम में तो इस आरोप से अधिक कठोर एक और आरोप हो सकता था और वह यह कि दाई इल्लल्लाह (ख़ुदा की ओर निमन्त्रण देना) और सिराजे मुनीर। ये दो नाम और दो विशेष उपाधियां क़ुर्आन करीम में आँहज़रत (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) को दी गई हैं। फिर वही दो उपाधियां इल्हाम में मुझे दी गईं। क्या यह आरोप दरूद भेजने से कुछ कम था। फिर इस से भी बढ़कर बराहीन अहमदिया के दूसरे इल्हामों पर आरोप हो सकते थे जिनकी मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी ने समीक्षा लिखी[2]★ और अनेकों स्थानों पर स्वीकार किया कि ये इल्हाम ख़ुदा की ओर से हैं अपितु उसके शिक्षक मियां नज़ीर हुसैन देहलवी ने कुछ गवाहों के समक्ष बराहीन अहमदिया के बारे

1★ -मानवीय स्वभाव और इस्लामी स्वभाव में सम्मिलित है कि मोमिन किसी रुचि के समय और क़ुदरत के किसी चमत्कार देखने के समये दरूद भेजता है। अत: इस युसल्लूना अलैका के वाक्य में संकेत है कि वे लोग जो हर समय पास रहेंगे वे कई प्रकार के निशान देखते रहेंगे। अत: उन निशानों के प्रभाव से प्राय: उनके आँसू जारी हो जाएंगे तथा रुचि की तीव्रता तथा आर्द्रता से उनके मुख से सहसा दरूद निकलेगा। अत: ऐसा ही घटित हो रहा है और यह भविष्यवाणी बार-बार प्रकट हो रही है कि संगत की शर्त पर प्रत्येक सौभाग्यशाली व्यक्ति इस अवस्था को प्राप्त कर सकता है। इसी से

2★ बराहीन अहमदिया पुस्तक पर बीस वर्ष गुज़र गए हैं। उस पुस्तक में ये भविष्यवाणियां हैं जो वर्षों पश्चात् अब पूरी हो रही हैं, जिस प्रकार कि यह भविष्यवाणी कि हम समस्त संसार में तुझे ख्याति देंगे और तेरा नाम समस्त देशों में ऊंच किया जाएगा और कोई नहीं होगा जो तेरे नाम से अपरिचित रहे। यह उस भविष्यवाणी है जबकि इस क़स्बे में भी मुझे सब लोग नहीं जानते थे और फिर इससे भविष्यवाणी इसी के साथ है और वह यह है कि लोग दूर-दूर के देशों से तुझे उपहार भेजेंगे और दूर-दूर से चलकर आएंगे। यह भी उस युग की भविष्यवाणी है जबकि दस कोस से भी मेरे पास कोई न आता था और न कोई एक पैसा बतौर उपहार भेजता था। अब इस प्रकार ये भविष्यवाणियां पूरी हुईं कि हज़ारों कोस से लोग आते हैं और हज़ारों रुपए से सहायता करते हैं और एक संसार में ख़ुदा ने ख्याति दे दी और कोई जाति अपरिचित नहीं रही। इस पर ख़ुदा की प्रशंसा। इसी से

में जिसमें ये इल्हाम थे अत्यन्त प्रशंसा की और कहा कि जब से इस्लम में पुस्तकें लिखने का सिलसिला आरम्भ हुआ है बराहीन के समान लाभ पहुँचाने, कृपा और विशेषता में कोई ऐसी पुस्तक नहीं लिखी गई। इतनी प्रशंसा से उनका उद्देश्य बराहीन अहमदिया के इल्हाम और उसकी भविष्यवाणियां थीं जिन से इस्लाम के विरोधियों पर समझाने का अन्तिम प्रयास पूर्ण होता था। इसी प्रकार पंजाब और हिन्दुस्तान के समस्त उलेमा ने कुछ के अतिरिक्त उन इल्हामों को ख़ुदा तआला की ओर से समझ लिया था जो वास्तव में ख़ुदा तआला की ओर से हैं। हालांकि उनमें इस विनीत का इतना सम्मान किया गया है कि जिस से बढ़कर संभव नहीं। और बतौर नमूना उनमें से ये हैं-

یا احمد بارك اللّٰہ فیك..... تفردنا بذالك فاتخذوا من مقام ابراھیم مصلّی.

अनुवाद- हे अहमद ! ख़ुदा ने तुझ में बरकत डाली, उसने तुझे क़ुर्आन सिखाया ताकि तू उन लोगों को डराए जिन के बाप-दादा को नहीं डराया गया और ताकि अपराधियों का मार्ग स्पष्ट हो जाए अर्थात् ज्ञात कि कौन-कौन अपराधी है। कह दे कि मुझ पर ख़ुदा का आदेश उतरा हुआ है और मैं समस्त मोमिनों में से प्रथम हूँ। वह ख़ुदा जिसने अपने रसूल को भेजा। उसने उसे दो बातों के साथ भेजा है। एक तो यह कि उसे मार्ग-दर्शन की ने'मत से सम्मानित किया है अर्थात् अपने मार्ग की पहचान के लिए अध्यात्मिक आँखें प्रदान की हैं और अपनी ओर से प्रदत्त ज्ञानों विशेष्य किया है तथा उसके हृदय को कश्फ़ और इल्हाम से प्रकाशित किया है। इस प्रकार ख़ुदा की पहचान, प्रेम और इबादत का जो उसका कर्त्तव्य था उस कर्त्तव्य को पूर्म करने के लिए स्वयं उसकी सहायता की है। इसलिए उसका नाम महदी रखा। दूसरी बात जिसके लिए उसे भेजा गया है वह सच्चे धर्म के द्वारा अध्यात्मिक रोगियों को स्वस्थ करना है अर्थात् शरीअत से संबंधित सैकड़ों कठिनाइयों और मुश्किलों का समाधान करके हृदयों से सन्देहों को दूर करना है। अत: इस दृष्टि से उसका नाम ईसा रखा है अर्थात् रोगियों को अच्छा करन वाला। अत: इस आयत में जो दो वाक्य मौजूद हैं एक 'बिलहुदा' और दूसरा 'दीनिलहक़'। इनमें से प्रथम वाक्य प्रकट कर रहा है कि वह भेजा हुआ मनुष्य महदी है और ख़ुदा के हाथ से शुद्ध हुआ है और केवल ख़ुदा उसका शिक्षक है। दूसरा वाक्य अर्थात् 'दीनिल हक़' प्रकट कर रहा है कि वह भेजा हुआ ईसा है और रोगियों को अच्छा करने के लिए तथा उनको उनके रोगों से सचेत करने के लिए ज्ञान दिया गया है तथा 'दीनुलहक़' (सच्चा धर्म) दिया गया है ताकि वह प्रत्येक धर्म के रोगी से स्वीकार करा सके और फिर अच्छा कर सके तथा इस्लामी चिकित्सालय की ओर प्रेरित कर सके, क्योंकि जब उसके सुपुर्द यह सेवा है कि वह इस्लाम की विशेषता और श्रेष्ठता प्रत्येक दृष्टि के समस्त धर्मों पर सिद्ध कर दे। अत: उसके लिए आवश्यक है कि उसे दर्मों के गुण-दोषों का ज्ञान दिया जाए तथा तर्क स्थापित करने तथा प्रतिद्वंद्वी को वाद-विवाद में निरुत्तर कर देने में उसे एक अद्भुत महारत प्रदान हो, प्रत्येक धर्मावलंबी को उसकी ख़राबियों से सचेत कर सके और हर पहलू से इस्लाम की विशेषता सिद्ध कर सके।(अरबईन नंबर 2) ... शेष

★ ★ ★

सय्यदना हज़रत अमीरुल मौमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल से पूछे जाने वाले महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर

अनुवादक: सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद M.A.

प्रश्न : इस मुलाक़ात में इस प्रश्न पर कि कोरोना वायरस की वजह से दुनिया की मौजूदा सूरत-ए-हाल में तब्लीग़ का काम किस तरह किया जाए? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल ने फ़रमाया :

उत्तर : जो ऑनलाइन तब्लीग़ है वह बहुत ज़्यादा शुरू हो गई है, वाट्स एप्प पर, सोशल मीडीया पर। यहां देखें कि लोगों के पास क्या-क्या प्रश्न हैं? क्या-क्या issues उठते हैं ? अलग साईटस हैं, उनमें जा कर उनको बताएं कि इन हालात में हमें अल्लाह तआला की तरफ़ ज़्यादा झुकना चाहिए, अल्लाह तआला की तरफ़ आना चाहिए, उसको पहचानना चाहिए। न यह कि atheist बन जाएं और ख़ुदा तआला को छोड़ दें। या यह समझें कि ख़ुदा तआला दुआएं क़बूल नहीं करता या ख़ुदा तआला नहीं है या दुनिया ही सब कुछ है। यदि दुनिया को बचाना है तो यह करो। क्योंकि इसके बाद फिर जो crisis आएगा, इस बीमारी के बाद दुनिया की economy जब shatter होती जाएगी तो अगला crisis फिर ये आएगा कि फिर एक दूसरे के माल पर क़बज़ा करने की कोशिश करेंगे और जब माल पर क़बज़ा करने की कोशिश करेंगे तो जंगें शुरू हो जाएँगी, जिस के लिए बलॉक बनते हैं और बलॉक बनने शुरू हो चुके हैं। तो इस से बचने के लिए यही तरीक़ा है कि ख़ुदा की तरफ़ आओ और अपनी ज़िम्मेदारियों को समझो। लेकिन जो भी मीडीया है, आख़िर लोगों का दुनिया से राबिता हो ही रहा हैं नां? इस मीडीया को आप भी इस्तिमाल करें, और इस तरीक़ को आप भी इस्तिमाल करें जो दुनिया इस्तिमाल कर रही है।

मेरा ख़्याल है कि आज जो बातें हो गई हैं उन्ही पर काम कर लें, और जो कुछ ज़रूरी बातें थीं वे मैंने कह दी हैं कि इन (नैशनल आमला) की ज़िम्मेदारियाँ क्या हैं और जो नैशनल आमला से मैं बातें कर रहा हूँ तो जो अलग अलग मजालिस हैं उनके सम्बन्धित सचिवों जो हैं, उन के लिए भी यही बातें हैं, उनको भी यह याद रखनी चाहिएं और इसके अनुसार अपनी policy बनानी चाहिए और अमल करवाना चाहिए। यदि grassroots level पर सारे काम होने शुरू हो जाएं, आपकी मजालिस के हर विभाग के जो सम्बन्धित सचिवों हैं वे अपना अपना काम करें, ज़िम्मेदारी को समझें तो नैशनल आमिला का भी काम आसान हो जाता है और इस उद्देश्य को भी आप पूरा करने वाले बन जाते हैं जिस के लिए आपको ओहदेदार बनाया गया है और इस तरह आप ख़लीफ़-ए-वक़्त के सहायक भी बन जाते हैं और जमाअत की ख़िदमत का जो काम है इस को भी सही तरह सरअंजाम देते हैं और अल्लाह तआला की निगाह में भी फिर आपकी ख़िदमत जो है वह मक़बूल होती है। लेकिन यदि केवल ओहदा रखना है और ओहदा रख के फिर काम नहीं करना और अपने ग़लत नमूने क़ायम करने हैं, दुआओं की तरफ़ तवज्जा नहीं देनी, आपस में विभागों में सहयोग नहीं करना, मर्कज़ी विभागों में और ज़ेली तन्ज़ीमों के विभागों में तआवुन नहीं होना तो ऐसे ओहदों का कोई लाभ नहीं, ऐसी तंज़ीम को कोई लाभ नहीं। और यह आप लोग मुझे तो धोखा दे सकते हैं, या निज़ाम जमाअत

को धोखा दे सकते हैं लेकिन ख़ुदा तआला को धोखा नहीं दिया जा सकता। इसलिए हमेशा याद रखें, हर काम करते हुए, हर वक़त याद रखें कि ख़ुदा तआला हमारे हर क़ौल और फ़ेअल को देखता और सुनता है। इसलिए हमने अल्लाह तआला की ख़ातिर हर काम करना है और इसके लिए अपनी समस्त सलाहीयतें, समस्त potentials को इस्तिमाल में लाना है ताकि हम जमाअत के सही फ़आल रुकन भी बन सकें और जमाअत की सही रंग में ख़िदमत भी कर सकें। अल्लाह तआला आपका हाफ़िज़-ओ-नासिर हो।

प्रश्न : एक महिला ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत अक़्दस में लिखा कि यदि मियां बीवी में उनकी शादी के अर्से में तीन दफ़ा तलाक़ हो जाए तो तीसरी तलाक़ के बाद सुलह की क्या सूरत होगी? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र दिनांक 22 जुलाई 2019 ई. में निमन्लिखित उत्तर अता फ़रमाया।

उत्तर: हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : क़ुरआन-ए-करीम का आदेश اَلطَّلَاقُ مَرَّتٰنِ बहत स्पष्ट है, जिसका मतलब है कि ऐसी तलाक़ जिसमें रुजू हो सके, केवल दो बार हो सकती है। इसके बाद फ़रमाया فَإِنْ طَلَّقَهَا فَلَا تَحِلُّ لَهُ مِنْ بَعْدُ حَتّٰى تَنْكِحَ زَوْجًا غَيْرَهُ۔ अर्थात ऐसी दो तलाक़ों के बाद यदि पति अपनी बीवी को तीसरी तलाक़ दे दे तो इस तीसरी तलाक़ के बाद उस पति का उस बीवी से सुलह करने का हक़ बाक़ी नहीं रहता। न इद्दत के समय में बग़ैर निकाह के और न ही इद्दत के ख़त्म होने पर निकाह के साथ वह उसके साथ घर आबाद कर सकता है। जब तक कि वह महिला किसी दूसरे व्यक्ति से बाक़ायदा निकाह न करे और वह पति उस महिला को बग़ैर किसी मंसूबा बंदी के तलाक़ दे दे।

अत: आपकी वर्णन करदा सूरत में अब इन मियां बीवी के मध्य सुलह की कोई गुंजाइश नहीं, जब तक कि उनके मध्य حَتّٰى تَنْكِحَ زَوْجًا غَيْرَهُ वाली शर्त पूरी न हो।

प्रश्न : एक महिला ने लिखा कि यदि कोई ग़ैर अहमदी मुसलमान मुझ से किसी ग़ैर अज़ जमाअत ज्ञानी की लिखी हुई तफ़सीर के बारे में पूछे तो मुझे उसे कौन सी तफ़सीर पढ़ने के लिए बतानी चाहिए? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र दिनांक 22 जुलाई 2019 ई. में इस प्रश्न का निमन्लिखित उत्तर अता फ़रमाया। हुज़ूर ने फ़रमाया :

उत्तर : पुराने बुज़ुर्गों की समस्त तफ़सीरें अच्छी हैं। आपकी जानकारी के लिए कुछ तफ़सीरों के नाम लिख रहा हूँ। उदाहरणत: तीसरी सदी हिज्री में लिखी जाने वाली तफ़सीर तिब्री, जिसका पूरा नाम "जामेउल ब्यान फ़ी तावीलुल क़ुरआन'' है और जिसे अबू जाफ़र मुहम्मद बिन जरीर बिन यज़ीद बिन कसीर तिबरी ने तसनीफ़ किया। छट्टी सदी हिज्री में इमाम अब्दुल्लाह मुहम्मद फ़ख़रुद्दीन इब्ने ख़तीब राज़ी की तसनीफ़ करदा तफ़सीर "मुफ़ातीह अल् गैब'' , मारूफ़ "तफ़सीर-ए-कबीर" बहुत उम्दा तफ़सीर है। सातवीं सदी हिज्री में लिखी जाने वाली तफ़सीर "जामे अहकाम अल-क़ुरआन" मारूफ़ "तफ़सीर कुर्तबी" मशहूर ज्ञानी अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अहमद बिन अबू बकर मारूफ़ ईमाम कुर्तबी ने तसनीफ़ फ़रमाई।

इसके अतिरिक्त तफ़सीर जलालीन, तफ़सीर इब्ने कसीर और तफ़सीर रूहुल मानी इत्यादि अच्छी और पढ़ने के योग्य तफ़ासीर हैं।

प्रश्न : एक दोस्त ने कुछ अहबाब की तरफ़ से पूछे जाने वाले इस प्रश्न के विषय में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से मार्ग दर्शन चाहा है कि घाना के माहौल को सामने रखते हुए जहां ऐसे ग़ैर अहमदी इमाम भी हैं जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और अहमदियत को सच्चा और बेहतरीन इस्लाम समझते हैं और मुख़ालिफ़त भी नहीं करते लेकिन किसी मजबूरी की वजह से क़बूल-ए-अहमदियत की तौफ़ीक़ नहीं पाते, तो क्या ऐसे अफ़राद या इमामों के पीछे नमाज़ पढ़ना जायज़ होगा? हुज़ूर अनवर ने अपने पत्र दिनांक 22 जुलाई 2019 ई. में इस का निमन्लिखित उत्तर अता फ़रमाया। हुज़ूर ने फ़रमाया :

उत्तर : सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने ग़ैर अहमदी इमाम के पीछे में नमाज़ न पढ़ने के विषय पर सैर-ए-हासिल बेहस फ़रमाई है और जहां आपने इस मसला के अलग पहलूओं को हमारे लिए खोल खोल कर वर्णन फ़रमाया है वहां आपके वर्णन करदा मसला पर भी रोशनी डाली है। इसलिए एक अवसर पर ऐसे लोगों के विषय में वर्णन हुआ जो न मुकफ़्फ़िर हैं न मुकज़्ज़िब और उनके पीछे नमाज़ पढ़ने का मसला दरयाफ़त किया गया। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाया :

"यदि वे मुनाफ़िक़ाना रंग में ऐसा नहीं करते जैसा कि कुछ लोगों की आदत होती है कि (बा-मुसलमाँ अल्लाह अल्लाह बा-ब्रह्मण राम राम) तो वह विज्ञापन दे दें कि हम न झूठे हैं न इनकार करने वाले (बल्कि बुज़ुर्ग नेक वली उल्लाह समझते हैं) और मुकफ़्फ़ेरीन को इस लिए कि वह एक मोमिन को काफ़िर कहते हैं, काफ़िर जानते हैं तो हमें ज्ञात हो कि वे सच्च कहते हैं अन्यथा हम उनका कैसे विश्वास कर सकते हैं और क्योंकर उनके पीछे नमाज़ का आदेश दे सकते हैं। उद्देश्य گر حفظِ مراتب نہ کنی زندیقی नरमी के अवसर पर नरमी और सख़्ती के अवसर पर सख़्ती करनी चाहिए फ़िरऔन में एक किस्म का रुश्द था और इसी रुश्द का परिणाम था कि इस के मुख से वह कलिमा निकला, जो सद-हा डूबने वाले कुफ़्फ़ार के मुँह से नहीं निकला। اٰمَنۡتُ اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا الَّذِیۡۤ اٰمَنَتۡ بِهٖ بَنُوۡۤا اِسۡرَآءِیۡلَ उस के साथ नरमी का आदेश हुआ قَوۡلًا لَّیِّنًا- और दूसरी तरफ़ नबी करीम को फ़रमाया وَاغۡلُظۡ عَلَیۡهِمۡ- ज्ञात होता है उन लोगों में बिल्कुल रुश्द नहीं था। अत: ऐसे आरोप लगाने वालों के साथ साफ़ साफ़ बात करनी चाहिए ताकि उनके दिल में जो गंद-ओ-ख़ुबस गुप्त है निकल आए और नंग जमाअत न हों।''

(बदर नम्बर 16 भाग 7 दिनांक 23 अप्रैल 1908 ई. पृष्ठ 4)

प्रश्न एक महिला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तसनीफ़ "तौज़ीउल मराम" के हवाले से फ़रिश्तों के चांद, सूरज और सितारों पर-असर डालने, इन तत्वों के इन्सानों पर-असर डालने, और फ़रिश्तों के जस्मानी तौर पर ज़मीन पर उतरने के बारे में हुज़ूर अनवर से मार्गदर्शन चाहा है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र दिनांक 22 जुलाई 2019 ई. में इस का निमन्लिखित उत्तर अता फ़रमाया। हुज़ूर ने फ़रमाया :

उत्तर : हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी इस तसनीफ़-ए-लतीफ़ में फ़रिश्तों के सितारों पर प्रभावित होने, सूरज, चांद, सितारों के हमारी ज़मीन के पेड़ पौधों और जीवों पर असर डालने और फ़रिश्तों के इन्सानों पर रुहानी असरात होने के विषय को निहायत लतीफ़ ढंग में वर्णन फ़रमाया है।

इसलिए फ़रिश्तों के सूरज, चांद, सितारों पर प्रभावित होने के आप के वर्णन करदा मज़मून का ख़ुलासा यह है कि फ़रिश्ते इन सितारों पर ख़ुदा तआला के आदेश के तहत कार्य कर रहे और सुनियोजित हैं और उन नक्षत्रों पर उनकी तासीरात बिलज़ात नहीं बल्कि अल्लाह तआला के इज़न और आदेश से होती हैं। हुज़ूर अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

"क़ुरआन-ए-करीम के संकेतों से निहायत सफ़ाई से ज्ञात होता है कि कुछ वे नफ़ूस तय्यबा जो मलायक से नामांकित हैं उनके ताल्लुक़ात तबक़ात समाविया से अलग अलग हैं। कुछ अपनी तासीरात ख़ास्सा से हवा के चलाने वाले और कुछ बारिश के बरसाने वाले और कुछ कुछ और तासीरात को ज़मीन पर उतारने वाले हैं।" फिर हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने एक मज़मून यह वर्णन फ़रमाया है कि इन नक्षत्रों अर्थात सूरज, चांद और सितारों का हमारी ज़मीन के जीव जंतुओं और हैवानात पर दिन रात असर पड़ता रहता है। इसलिए हम देखते हैं कि चांद की रोशनी से फल मोटे होते, सूरज की गर्मी और तपिश से फल पकते और मीठे होते और कुछ हवाएं बकसरत फल लाने का माध्यम होती हैं।

इस विषय में एक मज़मून हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने यह भी वर्णन फ़रमाया है कि जिस तरह फ़रिश्ते ख़ुदा तआला के आदेश से नक्षत्रों पर अपनी तासीरात डालते और नक्षत्रों का हमारी ज़मीन की ज़ाहिरी चीज़ों पर असर होता है इसी तरह मलायका ख़ुदा तआला के आदेश से हमारे दिल-ओ-दिमाग़ पर अपना रुहानी असर भी डालते हैं। इसलिए आप फ़रमाते हैं : "वास्तव में यह अजीब मख़लूक़ात अपने अपने स्थान मैं स्थिर और क़रारगीर है और हिक्मत के साथ कामला ख़ुदावंद-ए-तआला ज़मीन की हर एक मुस्तइद चीज़ को इसके कमाल मतलूब तक पहुंचाने के लिए यह रूहानियात ख़िदमत में लगी हुई हैं। ज़ाहिरी ख़िदमात भी बजा लाते हैं और बातिनी भी। जैसे हमारे अजसाम और हमारी समस्त ज़ाहिरी कुव्वतों पर आफ़ताब और सूरज और अन्य सय्यारों का असर है ऐसा ही हमारे दिल और दिमाग़ और हमारी समस्त रुहानी कुव्वतों पर ये सब फ़रिश्ते हमारी अलग इस्तिदादों के अनुसार अपना अपना असर डाल रहे हैं।"

जहां तक फ़रिश्तों के ज़मीन पर उतरने और इन्सानों से मेल-जोल करने का प्रश्न है तो इस बारे में याद रखना चाहिए कि क़ुरआन-ए-करीम, हदीसे नब्वी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और इर्शादात हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से यह बात साबित है कि फ़रिश्तों का ज़मीन पर नुज़ूल उनके वास्तविक वजूद के साथ हरगिज़ नहीं होता। बल्कि अल्लाह तआला के आदेश से मलायका इन्सानों की शक्ल इख़तियार कर के उस के नेक बंदों से मेल जोल करते हैं। इसलिए क़ुरआन-ए-करीम और हदीसों में ऐसे कई वाक़ियात का वर्णन मौजूद है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस मज़मून को वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं :

"यही नफ़ूस नूरानिया कामिल बंदों पर बशक्ल जस्मानी रूम में हो कर ज़ाहिर हो जाते हैं और बशरी सूरत से मुतमस्सिल हो कर दिखाई देते हैं।" (तौज़ीह मराम, रुहानी ख़ज़ायन भाग 3 पृष्ठ 68 से 72) शेष.....

★ ★ ★

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرًا بَصِيْرًا ○ (سورہ بنی اسرائیل، آیت 31)

LUCKY BATTERY CENTRE

BATTERY & DIGITAL INVERTER

Thana Chhak, NH-5 Soro
Balasore, Odisha
Pin 756045
e-mail : abdul.zahoor786@gmail.com

Mob. : 09438352786, 06788221786

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرًا بَصِيْرًا ○ (سورہ بنی اسرائیل، آیت 31)

Prop.
Sk. Riyazuddin

Moblie: 9437188786
9556122405

KING TENT HOUSE

At. Ashram Chak, P.O. Soro, Distt. Balasore, ODISHA

يُنْۢبِتُ لَكُمْ بِهِ الزَّرْعَ وَالزَّيْتُوْنَ وَالنَّخِيْلَ وَالْاَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ○ (النحل 12)

Prop : Sk. Ishaque

Phangudubabu : 7873776617
Papu : 9337336406
Lipu : 9778116653

FFT Fruits

FAIZAN FRUITS TRADERS

Near Railway Gate, Soro, Balasore, Odisha - 756045

PAPU LIPU ROAD WAYS
All India Truck Supplier
Papu : 9337336406, Lipu : 9437193658, 9778116653,

Sayed Wasim Ahmad

Mobile
09937238938

محبت سب کے لئے نفرت کسی سے نہیں

RUKSAR AGENCY

Pran Juice, Gandour Food Products,
Monginis Cake, Raja Biscuit etc.

Mubarakpur, At. Soro,
Distt. Balasore (Odisha)

REHAN'S

REHAN INTERNATIONAL

WE ARE ON

snapdeal
flipkart
amazon.com
Paytm

Ph: 7702857646
rehaninternational@gmail.com

We accept All Debit & Credit Cards

Urfan Ahmed Saigal
9550147334
deco.leathers@gmail.com

DECO
DL
LEATHERS

Genuine Quality

We Undertake Complimentary Orders Also
Manufacture

Address:1/1/129, Alladin Complex 72, SD Road
Address: 1/1/129, Alladin Complex 72, SD Road
Clock Tower, Beside Kamar, Hotel, Secunderabad-3

Sayed K. A. Rihan, M.B.A.
Proprietor
Tel: 9035494123/9740190123

B.M.S.ENTERPRISES

INDUSTRIAL UTILITY SOLUTIONS

21, Erannappa Layout Ambadkar Main Road,
Mahadevapura, Bangalore - 560 048
E-mail: bmsentrprises@gmail.com

Mob. 9934765081

Guddu Book Store

All type of books N.C.E.R.T, C.B.S.E & C.C.E are available here. Also available books for childrens & supply retail and wholesale for schools

Urdu Chowk, Tarapur, Munger, Bihar 813221

NASIR MAHMOOD
Ph. : 9330538771
7686979536

MANUFACTURER and WHOLE SELLER

Leather Wallats, Jackets, Ladies Bag, Port Folio Bag, Key Chain, Belts etc.

70D Tiljala Road, Kolkata - 700046
e-mail : nasirmahmood.125@gmail.com

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

Cell
9423805546 / 9960071753
9420399786 / 2363271443

Prop.
Hameed Khan Beejali

Creative Computers

Durwankur, Appt. 05, Old, Shiroda Naka,
Tal. Sawantwadi, Distt. Sindhudurg, Maharashtra - 416510

Ziyafat Khan
Mobile
09937845993

Love For All Hatred For None

दुआओं का आवेदक

WASIMA STONE CRUSHER

Pankal, Near Nuapatna Town,
Distt. Cuttack (Odisha)

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا
(بنی اسرائیل آیت 31)

Mob. : 09986670102
09036915406

Prop.
Fazal-e-Haq
Eajaz-ul-Haq
Anwar-ul-Haq
Rizwan-ulHaq

Al-Fazal Garments

Specialist in : School Uniform, Tai, Belt, Jeans, T-Shirts, Shirts etc.

Opp. Krishna Gramina Bank, Beside Sana Medical, Main Road, Yadgir, Karnataka

पत्रिका के बारे में कृपया अपनी राय (Feedback) अवश्य दें

प्रिय पाठको! धार्मिक भेद-भाव तथा धर्मों के बीच पनप रही नफरत के वर्तमान परिदृश्य में पत्रिका "**राहे ईमान**" के द्वारा हम निरंतर इस्लाम की वास्तविक तथा मौलिक शिक्षाओं से आपको अवगत कराने का प्रयास कर रहे हैं। इस पत्रिका को पढ़कर आपको कैसा लगा, हमारे संपादकीय मंडल की ओर से जो लेख इस पत्रिका में प्रकाशित किए जाते हैं उनके प्रति आपकी क्या राय है? यह हमें अवश्य बताएं। आपका **फ़ीडबैक (प्रतिक्रिया)** इस पत्रिका को लाभदायक तथा ज्ञानवर्धक बनाने में हमारी सहायता करेगा।

यदि आपके पास कोई ऐसा सुझाव हो जो इस पत्रिका को और भी बेहतर बना सकता है तो खुद्दामुल अहमदिया भारत (जमाअत के अंतर्गत नौजवानों की संस्था) आपके सुझाव का स्वागत करती है। हमारा इस पत्रिका को बेहतर से बेहतर तथा ज्ञान वर्धक एवं ईमान वर्धक बनाने का प्रयास निरन्तर जारी है। इसके अतिरिक्त भी यदि पत्रिका से संबंधित और भी कोई सुझाव या परामर्श आप हमें देना चाहते हैं तो उसका हृदय से स्वागत है।

आप अपना फ़ीडबैक हमें मज्लिस खुद्दामुल अहमदिया भारत की ईमेल आईडी पर भिजवा सकते हैं और एडिटर या मैनेजर को फोन भी कर सकते हैं :-

Email id- khuddam@qadian.in

Manager- 98156-39670, Editor- 91150-40806

वह मेरी जमाअत में से नहीं.....(आइए हम अपना निरीक्षण करें)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं: "जो मनुष्य अपनी पत्नी और उसके संबंधियों से उदारता और शालीनता का व्यवहार नहीं करता वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो मनुष्य अपने पड़ोसी को तुच्छ से तुच्छ भलाई से भी वंचित करता है वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो मनुष्य नहीं चाहता कि अपने दोषी का दोष क्षमा करे और द्वेष भाव रखता है वह मेरी जमाअत में से नहीं है।

प्रत्येक मनुष्य जो अपनी पत्नी से और पत्नी अपने पति से ख़यानत का व्यवहार करती है वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो मनुष्य उस प्रतिज्ञा को जो उसने बैअत करते समय की थी किसी प्रकार भी तोड़ता है वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो वास्तव में मुझे मसीह मौऊद और महदी नहीं समझता वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो मनुष्य पुण्यादेशों में मेरी आज्ञा पालन करने के लिए तैयार नहीं वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो मनुष्य विरोधियों के साथ बैठकर उनका समर्थन करता है वह मेरी जमाअत में से नहीं है। प्रत्येक बलात्कारी, दुराचारी, शराबी, खूनी, जुआरी, धरोहर को हड़पने वाला, घूस लेने वाला, दूसरों का अधिकार हनन करने वला, अत्याचारी, झूठा, पाखण्डी और उसका साथी, अपने भाई बहनों पर अनुचित आरोप लगाने वाला, जो अपने दुष्कर्मों को त्याग कर क्षमा याचना नहीं करता और बुरी संगत का परित्याग नहीं करता वह मेरी जमाअत में से नहीं है। यह सब विष हैं तुम इनका विषपान करके किसी भी प्रकार बच नहीं सकते। अन्धकार व प्रकाश एक स्थान पर एकत्र नहीं हो सकते। प्रत्येक मनुष्य जो पेचीदा स्वभाव रखता है और ख़ुदा के साथ स्वच्छ और पवित्र संबंध नहीं रखता वह उस अनुकम्पा को कदापि प्राप्त नहीं कर सकता जो स्वच्छ और पवित्र हृदय वालों को प्राप्त होती है।" (पुस्तक: कश्ती नूह)